खण्ड: XIV अंक: 7 व 8

जुलाई–अगस्त, 2002

चैतन्य लहरी

सामूहिकता हमारे उत्थान का मूलाधार है। यदि आप ध्यान केन्द्र पर नहीं आते हैं, यदि आप सामूहिक नहीं हैं, यदि आप परस्पर मिलते–जुलते नहीं तो आप अंगुली से कटे नाखून की तरह हैं और परमात्मा को आपसे कुछ नहीं लेना–देना।

परम् पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी

निर्मला देवी जी के 79वे

1- नव वर्ष पूजा, कालवे, 31-12-2001

5- महा शिव रात्रि पूजा, पुणे, 17-3-2002

17- जन्म दिवस पूजा, दिल्ली, 21-3-2002

26- श्रीमाताजी की दुल्हनों को सीख, 23-9-2001

29- श्रीमाताजी की दुल्हों को सीख, 23-9-2001

35- पूर्ण समर्पण एकमेव पथ, 31-7-1982

50- जन कार्यक्रम, नोएडा, 18-3-1989

चैतन्य लहरी

प्रकाशक
वी.जे. नलगीरकर
162 – ए, मुनीरका विहार, नई दिल्ली – 110067

मुद्रक
प्रिंटो–ओ–ग्राफिक्स
नई दिल्ली

सदस्यता के लिए कृपया इस पते पर लिखें :-
श्री ओ.पी. चान्दना
एन – 463 (G-11) ऋषि नगर, रानी बाग,
दिल्ली – 110034
फोन : (011) 7013464

सहज सम्बंधी अपने अनुभव, चमत्कारिक फोटोग्राफ तथा कलाकृतियाँ निम्न पते पर भेजें :

चैतन्य लहरी
सहजयोग मंदिर
सी – 17, कुतुब इन्स्टीच्यूशनल एरिया
नई दिल्ली – 110016

नव-वर्ष पूजा

कालवे, 31.12.2001

(परम् पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन)

देर हो गई और आप लोगों की प्रेम की शक्ति मुझे खींच के लाई है यहाँ। कुछ तो आपकी माँ की तबियत ठीक नहीं है और इच्छा शक्ति जबरदस्त है। उसी के बूते पर चल रहा है।

मैं चाहती हूँ आप लोगों की भी इच्छा शक्ति जबरदस्त हो जाए। इस मामले में आपने क्या किया वो खुद ही सोचना चाहिए। अपनी ओर नज़र करके देखें कि आपने इसमें कौन सी मेहनत की? आप ध्यान करते हैं, ध्यान में आप गहनता लाएँ और सोचिए कि आप एक संत हैं। और आपको क्या करना चाहिए? माँ ने आपको संत बना दिया है। अब आपको आगे क्या करना चाहिए? अपनी दुरुस्ती तो करनी है। इसमें कोई शक नहीं। आगे आपको क्या करना चाहिए? अपनी दुरुस्ती आप करिए, पर उसके बाद जब वो फलीभूत हो गई और जब पूर्णत्व को आप पहुँच गए, तब आप क्या कर रहे हैं? तब भी आप सिर्फ ध्यान में जाते हैं या प्रोग्राम में जाते हैं और वहीं तक चलता है। इसके आगे क्या किया? आपको ये दान मिला है आपकी आत्मा के आधार से। आत्मा ने आपको पुनर्जन्म दिया, तो आप इससे आगे क्या कर रहे हैं, ये आपको देखना चाहिए। कौन सी प्रगति आप कर रहे हैं कि सिर्फ इस शक्ति को अपने लिए, अपने बच्चों के लिए आप इस्तेमाल करें? ये बहुत जरूरी है क्योंकि मैंने देखा है कि पार होने पर भी लोगों में दोष रह जाता है। पूर्णता आनी चाहिए। जब तक आप दूसरों से संबंधित हो कर के सहजयोग का कार्य न करें, आपको पता ही नहीं चलेगा कि आप के अंदर कौन से दोष रह गए हैं। यहाँ तक कि लोग आते हैं और पैसा बनाते हैं। ऐसे बहुत से लोग हैं जो सहजयोग में आने के बाद पैसा बनाते हैं बाद में जरूर वो खुल जाते हैं, दिखाई देता है और बेकार परेशानी होती है। सो फायदा क्या?

आप यहाँ पैसा कमाने नहीं आए हैं। आप यहाँ धर्म बाँधने आये हैं। और धर्म को मानना चाहिए। और बंबई शहर में हमने सुना है कि अनेक तरह के अधर्म चल पड़े हैं जो 20-25 साल पहले यहाँ बिल्कुल नहीं थे। एक तो आजकल के सिनेमा जो बन रहे हैं, उसकी शुद्धता बहुत कम है। ऐसे सिनेमा देखना ही नहीं चाहिए। आप इतने लोग ऐसे सिनेमा न देखें तो वो सिनेमा चलेंगे ही नहीं और वैसे चल भी नहीं रहे हैं। पर जो गन्दे सिनेमा होएंगे वो लोगों को पसन्द नहीं। लोग चाहते हैं कि

अच्छे ऐसे सिनेमा बनें कि जिसको कुटुम्ब जा कर देख सके।

एक ये बात हो गई। और भी अत्यंत मलेच्छ, गन्दे तरीके से लोग गन्दी–गन्दी चीजें पढ़ते हैं। आप लोग नहीं। आप लोग पढ़ते नहीं हैं। मैं मानती हूँ। पर अखबार में भी बहुत अश्लील चीजें लिखी जाती हैं। सो सबसे पहले अपने को निर्मल कर लेना चाहिए। सबसे बहुत है लोगों में कि उनकी आँखें चारों तरफ दौड़ने लगती हैं। **जिनकी आँखे इधर-उधर दौड़ती हैं वो सहजयोगी हैं ही नहीं।** आँखे स्तब्ध, निश्चल होनी चाहिएं। ये पहली पहचान है। गर अब भी आँखें इसकी तरफ, उसकी तरफ ऐसे दौड़ती हैं तो इसे कहना चाहिए, अभी आप सहजयोगी नहीं।

दूसरे लालच। आप में अगर अब भी लालच बाकी है तो आप सहजयोगी नहीं हो सकते। और ये लालच एक दिन खुल जाएगी। पहली चीज़ है लालच छूटनी चाहिए।

पर श्री कृष्ण ने तो कहा है कि पहली चीज़ है गुस्सा छूटना चाहिए। जब तक गुस्सा आपको आए तो सोचना चाहिए कि आप अभी सहजयोगी नहीं हैं। किसी ने हमें गुस्सा होते देखा नहीं। सब लोग कहते हैं कि माँ आप तो गुस्सा होते ही नहीं और कभी–कभी ऐसी बातें हो जाती कि उस पर किसी को भी गुस्सा आ जाए, मैं कहती हूँ, क्या फायदा? गुस्से से कोई फायदा नहीं।

आज बताना मुझे ये है कि आप अपनी ओर नज़र करें और नज़र से देखें कि आपके अंदर अभी तक कौन से दोष बचे हैं। इसी को हम कहते हैं कि आप अपनी सफाई करो। निर्मल तत्व अपने अंदर लाएं। उससे जो दोष हैं वे पूरी तरह से नष्ट हो जाएँगे। क्या फायदा है इन दोषों को रखने से। उससे किसी को आज तक फायदा नहीं हुआ। अधिकतर लोग तो जेल ही चले गए और जो नहीं गए हैं उन पर लोग थूकते हैं। इसलिए आप लोगों से मुझे बताना है एक ही बात कि आप दूसरों के दोषों की तरफ मत देखिए। अपने दोषों की तरफ देखिए और देखिए कि आप में क्या दोष है। गुस्सा आप में आता है? आप के अब भी आँख में लालसा है? और आपको Attraction है सब चीज़ों के लिए? ये खरीदें, वो खरीदें, ये लाएँ, वो लाएँ। ये सबसे ज्यादा अमेरीका में था लेकिन America एक दम बड़े भारी आघात से दब गया। पागल जैसे ये खरीद, वो खरीद। इसके घर जा, उसके घर जा। हाँ अगर खरीदना ही है तो ऐसी चीज़ खरीदो जो हाथ से बनी हो। जिसमें कल्पना हो, जिसमें आपकी सृजन शक्ति दिखाई दे। ऐसे लोग बेचारे जो इतनी बढ़िया–बढ़िया चीज़ें बनाते हैं, उसको कोई नहीं खरीदता। फालतू की चीज़े खरीदते हैं। इन फालतू की चीज़ों से न तो आपका भला होगा और न ही उन लोगों का जो इतनी अच्छी चीज़ें बनाते हैं। हरेक चीज़ में अगर आप कलात्मक हो जाऐं। घर में हरेक चीज़ जो आए वो कलात्मक होनी चाहिए। पचासों बर्तन रखेंगे

पर एक कायदे का बर्तन नहीं। कारीगरों से ये जो बनी हुई चीज़ें हैं, उनका संगोपन होना चाहिए, अगर आप सहजयोगी हैं। बेकार की चीज़ें आप खरीदते रहते हैं, जिनका कोई अर्थ नहीं। यहाँ तक मैंने देखा है कि औरतें साड़ियाँ खरीदेंगी। साड़ियों पर साड़ियाँ और एक भी साड़ी कायदे की नहीं। अजीब–अजीब, उसमें क्या–क्या बना देते हैं भूतों जैसी चीज़। अच्छी सुन्दर और कल्पना से भरी हुई आप दो साड़ियाँ रखें, बनिस्बत आप 50 साड़ियाँ लें। अपने देश में अभी भी कलात्मकता का Appreciation है। उसको जानना है उसको समझना है। मैं देखती हूँ जब घरों में जाओ तो अजीब भूत जैसे रंग लगे हुए हैं। भूत जैसी Decoration हैं!

आप लोग सहजयोगी हैं। आप को समझना चाहिए कि कौन सी चीज़ सौन्दर्य पूर्ण है। और सौन्दर्य को समझना चाहिए। तभी आप अपने जीवन को भी सुन्दर बनाऐंगे। कि जो आदमी आपसे मिले या औरत आप से मिले वो ये कहे कि बहुत ही बढ़िया आदमी है। बहुत ही सुन्दर है। जिस तरह से आप अपने को सौन्दर्य से सजाएगें इसी तरह से आप उसके वातावरण और घरों को सौन्दर्य से सजाएगें यह पहली पहचान है। अगर सहजयोगी भूत जैसा घूमता हो तो वो किस काम का। कायदे से कपड़े पहनना, कायदे से बातचीत करना, कायदे से सबसे व्यवहार करना, सुन्दर–सुन्दर चीज़ों से अपने घर को सजाना। फूलों से भी सजा सकते हैं। अपने यहाँ बगीचा लगा लिया। मतलब सौन्दर्य दृष्टि सबसे पहले सहजयोगियों में आनी चाहिए। फालतू की बहुत सी चीज़ें घर के अंदर भरी हुई हैं आजकल क्योंकि बाज़ार हैं। बाज़ार में जाते हैं वहाँ कुछ खरीदते हैं। ऐसी जितनी भी चीज़ें हैं, उठा कर होली कर दीजिए बेकार की चीज़ों की। प्लास्टिक का आजकल इतना हो गया है कि गिलास भी ढूँढना हो तो वो प्लास्टिक। अरे ये तो बहुत ज़्यादती है। मैं तो प्लास्टिक इस्तेमाल नहीं कर सकती। प्लास्टिक की साड़ियाँ हो गईं। प्लास्टिक का ये हो गया। इतना उपयोग प्लास्टिक का आ गया है कि उससे आदमी बीमार पड़ने का बड़ा अंदेशा है। बच्चे मरते हैं। सब कुछ है। तो जहाँ तक हो सके प्लास्टिक इस्तेमाल नहीं करें। जहाँ तक हो सके। पर आजकल सभी चीज़ में प्लास्टिक आ गया है। खासकर बम्बई में तो बड़ी मुश्किल है कि यहाँ तक कि सोफा सैट भी प्लास्टिक का बनाते हैं। बैठना है तो प्लास्टिक में, पहनना तो प्लास्टिक, चलना तो प्लास्टिक और अब थोड़े दिन में मोटरें भी प्लास्टिक की बनाएँगे। सो आपका प्लास्टिक से कोई मतलब नहीं। आप सहजयोगी हैं। मैं ये नहीं कहती कि आप चोगा पहन के घूमो। ये नहीं है सजहयोग में। कायदे के कपड़े पहनिए। कायदे से रहें। कोई ऐसी बात नहीं है कि जिससे आप साधू बाबा दिखाई दें। कोई ढोंगबाज़ी नहीं। पर जो चीज़ आपके लिए हितकारी नहीं वो नहीं इस्तेमाल करनी चाहिए। उससे दूर रहना चाहिए

और बच्चों को भी बचाना चाहिए।

दूसरी बात सहजयोग में मैंने देखा कि सब लोग चाहते हैं कि मैं उनके घर जाऊँ। आप क्यों नहीं समझते कि मैं आपके घर आऊँ, ऐसा आपने क्या किया? या फिर जिसको देखो वही हमारे घर आना चाहता है! मैं कहीं भी जाती हूँ मुझे आराम से रहने नहीं देते। आपने अभी कुछ भी नहीं किया है।

आप किसी भी तरह से ये इच्छा बनी रहने दीजिए और ये सोचिए कि अभी आपकी औकात क्या है? आप क्या चाहते हैं? ऐसी क्यों चाहत करें जिससे आपकी माँ को तकलीफ हो। ऐसे क्यों काम करना जैसे हम कहीं से आए, आकर सामने खड़े हो गए। ऐसा नहीं करिए। **समाधान, अगर सहजयोग में नहीं आया तो आप बेकार हैं। जहाँ भी हैं, माँ हमारे साथ हैं, इस प्रकार एक समाधानी वृत्ति होनी चाहिए। उसी से आपकी प्रगति होगी।** जिस चीज़ की दुनिया में प्रगति होती है, वो सब कुछ समाधान में रत है। जब आप समाधानी नहीं और पूरे समय आप दबते रहें सबके सामने तो उससे क्या फायदा? **समाधान से जहाँ आप हैं वहीं माँ है ऐसा जब आपको महसूस होगा तभी माना जाएगा कि आप सहजयोगी हैं।** जहाँ बैठे हैं, सामने आना, स्टेज पर चढ़ना, इसकी ज़रूरत नहीं किसी समाधानी आदमी को। हमें सबके बारे में मालूम है पर समाधान ऐसी चीज़ है कि जिससे गहराई में आप मुझे पा सकते हैं और मैं आपको जान सकती हूँ। मैं चाहती हूँ कि अब जिस दशा में आप आएँ अब आप उस समाधान को प्राप्त हों और देखें कि आप जो भी कर रहे हैं उससे आपको समाधान मिलें।

आप सहजयोग में कार्यरत हों और सहजयोग बढ़ाएँ। आप बहुत समाधानी हो जाएँगे। आपको यह नहीं लगेगा कि माँ के सामने सारी चीज़ें रखें। माँ के सामने खड़े रहें। **अधिकतर मैंने ऐसा देखा है कि जो लोग बहुत आगे-आगे करते हैं वो या तो बेईमान होते हैं और या तो वो चोर होते हैं। जो लोग दिल से साफ हैं और जो प्यार में रत हैं वो अपने प्यार में मग्न रहते हैं।** अब मैं चाहती हूँ कि अब ये समय आ गया है कि आप लोग अब मेरे ऊपर मेहरबानी करें क्योंकि मुझसे तो सब Vibrations आप खींचते हो और अगर आप लोग ठीक नहीं हैं तो मेरी तबियत खराब हो जाती है। इसलिए आप को बिल्कुल ये निश्चय कर लेना चाहिए कि हम ऐसे बनें कि जिससे माँ जो हैं वो खुश हो जाएं और फिर उससे जो है दुनिया बदल जाए। आज बहुत देर तक लोग बैठे रहे, कुछ गए भी होंगे। पहचान ये ही है कि आप यहाँ बैठे हैं। शान्ति में बैठे हैं। पहले तो धूम धड़ाका सब लोग इतनी जोर–जोर से चिल्लाते थे, बोलते थे। अब शांत बैठे हैं। ये मेरे लिए तो बहुत ही कमाल ही चीज़ है।

परमात्मा आपको धन्य करें।

शिव पूजा

पुणे, 17.3.2002

(परम् पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन)

आज हम यहाँ शिव पूजा करने के लिए एकत्रित हुए हैं। केवल पवित्र हृदय लोग ही शिव पूजा करने के अधिकारी हैं। अपवित्र हृदय लोगों को शिव पूजा करने का अधिकार नहीं होता। शिवरात्रि का यह सहज सिद्धान्त है।

कल जैसे आपने देखा यहाँ पर शिवलिंगों के ऊपर भयानक सर्प दिखाए गए थे। इसका महत्व ये है कि जो लोग पवित्र हृदय के हैं, जिनमें और लोगों के प्रति प्रेम है, सर्प रूप में शिव की शक्तियाँ सदैव उनकी रक्षा करती हैं। ऐसा हम केवल प्रतीकात्मक रूप में कहते हैं। परन्तु मैं कहना चाहूंगी कि पशु परमेश्वरी शक्ति को मानव से कहीं बेहतर समझते हैं क्योंकि उनका हृदय अत्यन्त शुद्ध होता है। जो भी जीवन शैली प्रकृति उनमें बनाती है वे उसी से काम चलाते हैं। उनमें न कोई ईर्ष्या होती है न कोई दुर्भाव। ये सारी तुच्छ भावनाएं उनमें नहीं होती। प्रकृति के अनुरूप वो सब कुछ किए चले जाते हैं।

परन्तु मानव का केवल एक ही गुण है कि वह कितना प्रेम कर सकता है और कितनी क्षमा। मानव की प्रेमशक्ति ऐसी है

जिसके द्वारा वे सारी नकारात्मक शक्तियों पर विजय प्राप्त कर सकता है वह ये आसानी से देख सकता है कि इन दुर्गुणों को अपने अन्दर बनाए रखना अच्छा नहीं है और मानव इस बात को समझता है कि इस प्रकार के अमानवीय व्यवहारों में फँसे रहना अच्छी बात नहीं है। इन चीज़ों में फँसे रहने की उन्हें कोई मजबूरी नहीं है उन्हें ऐसा करने के लिए कहा भी नहीं जाता। परन्तु अचानक वो ऐसी चीज़ों की तरफ आकर्षित हो जाते हैं जिनमें घृणा, ईर्ष्या एवं लालच है।

आप ध्यान दें कि श्री शिव किस प्रकार रहते हैं। वे हिमालय में रहते हैं। आप देखें कि वो क्या पहनते हैं, वो क्या खाते हैं। उन्हें किसी भी चीज़ की आवश्यकता नहीं है क्योंकि वो अपने आप में पूर्ण हैं सम्पन्न हैं। श्री शिव का व्यक्तित्व ऐसा है। जब आप श्री शिव की पूजा करते हैं तो अपने हृदय में झाँककर देखा करें कि मेरे अन्दर कैसी भावनाएं हैं। किस प्रकार के दुर्भाव मैंने अपने हृदय में पाले हुए हैं।

आजकल भारत में लालच का प्राबल्य है। लोग अत्यन्त तुच्छ एवं घटिया बन गए हैं। ये सोच पाना भी असम्भव है कि उनके लिए पैसा ही सभी कुछ है। वास्तव में यह भारतीय संस्कृति नहीं है, किसी भी प्रकार से नहीं। परन्तु कुछ लोगों ने इस दुर्गुण को अपना लिया है। संभवतः उन्होंने यह विदेशों से प्राप्त किया है और अब इसका इतना प्रचार है कि धन ही श्रेष्ठतम है।

श्री शिव के विषय में सोचें उन्होंने कभी धन के विषय में नहीं सोचा, कभी धन की इच्छा नहीं की, कभी उन्होंने दिखावा नहीं किया। शिव और शक्ति में बहुत अन्तर है। उनके पूर्ण दृष्टिकोण में। पूर्ण स्वतन्त्र व्यक्तित्व होने के कारण शिव किसी चीज की चिन्ता नहीं करते। लोग यदि गलत कार्य कर रहे हों तो वो उन्हें नष्ट कर देंगे समाप्त! उन्हें ठीक करने की, सुधारने की श्री शिव को कोई इच्छा नहीं है। वे ऐसे किसी चक्कर में नहीं पड़ते। परन्तु शक्ति के लिए ऐसा करना आवश्यक है क्योंकि सभी मानव उनके बच्चे हैं। पूरा ब्रह्माण्ड उनकी सन्तान है। उन्होंने ही इसका सृजन किया है। अतः उनका चिन्तित होना स्वाभाविक है। मूर्खतापूर्ण तुच्छ कार्यों में फँसने वाले लोग उन्हें पसन्द नहीं।

सर्वप्रथम मानव ने सत्तालोलुपता में फँसना शुरु किया। अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए मनुष्य एक देश से दूसरे देश गए। वो सारी सत्ता कहाँ गई? समाप्त हो गई। उसके पश्चात् उन्होंने अपनी ये कार्यशैली अन्य लोगों को दे दी और अब लोगों का निर्लज्जता पूर्वक लालची होना आम बात हो गई है। श्री शिव ही उनका समाधान है ऐसे सभी लोग नष्ट हो जाऐंगे। पहले उनका पर्दाफ़ाश होगा और फिर उन्हें नष्ट किया जाएगा पूरी तरह से।

श्री शिव उच्च चरित्र व्यक्ति का सम्मान करते हैं। केवल उस व्यक्ति का जिसका चरित्र उच्च है कोई यदि दुष्चरित्र है या

चरित्रहीनता में फँसा हुआ है तो शिव उसे क्षमा नहीं करेंगे। अतः शक्ति सृजन करती हैं, सुरक्षा प्रदान करती हैं, देखभाल करती हैं और पोषण करती हैं। परन्तु श्री शिव तो नष्ट करने के लिए ही बैठे हुए हैं। ऐसा करना, इस प्रकार का विनाश बहुत आवश्यक है। शक्ति अपनी विनाशकारी शक्तियों को नहीं दर्शातीं। हो सकता है वे कुछ राक्षसों का वध कर दें। परन्तु श्री शिव तो एक के बाद एक राष्ट्र को नष्ट कर सकते हैं।

सर्वप्रथम जो अहं उनमें है उसे कौन नष्ट करेगा? वही शिव आपके सहस्रार में हैं। सहस्रार में वो विराजमान हैं। सभी चीज़ों के शिखर पर, इस बात को याद रखें। उस दिन मैं आकाशवाणी के एक संवाददाता से मिली वह अत्यन्त मूर्ख था और बहुत ही कटुता पूर्वक बोल रहा था। मैंने उसके एकादश रुद्र को देखा, "हे परमात्मा!" मैंने कहा, यह तो कष्ट में फँसने वाला है।" एकादश क्या है? यह शिव की ग्यारह शक्तियाँ हैं। ये यहाँ पर (मस्तक) एकत्र होती हैं और सभी प्रकार के रोग, जिनमें कैंसर सबसे खराब है, लाती हैं। मैं जानती थी कि ये व्यक्ति बहुत कठिनाई में फँसने वाला है। वह सहजयोगी भी नहीं है किस प्रकार से मैं उसे बताऊं? कोई भी उसे कैसे बताता? परन्तु ये सब एकादश रुद्र के कारण हुआ।

ये सब श्री शिव की ग्यारह शक्तियाँ है जिनका भली–भांति वर्णन किया गया है। **ये सभी लोगों पर कार्य करने लगती हैं। सहजयोगियों पर भी, यदि वे सहजयोग के नियमों का पालन नहीं करते।** आपके जीवन के हर कार्य को देख रहे हैं। आप किस प्रकार से आचरण करते हैं, क्या करते हैं, आपका धर्म क्या है, वह ये सब कुछ देखते हैं। बहुत से सन्तों ने आपको चेतावनी दी है, बहुत से अवतरणों ने आपको चेतावनी दी है परन्तु यदि आप उनकी बात को नहीं सुनते तो शिव बिल्कुल नहीं सुनेंगे। वे किसी की बात नहीं सुनते। वे जब नाराज़ हैं तो नाराज़ हैं। चाहे जो भी हो उन्हें ये समझाना बहुत कठिन होता है कि इस व्यक्ति को क्षमा कर दें, ये ठीक है। इसे क्षमा कर दें। क्षमा उनका मूल गुण है क्या आप इस बात की कल्पना कर सकते हैं? क्षमा उनका मूल गुण है परन्तु यदि वे क्षमा नहीं करते तो व्यक्ति का अन्त हो जाता है। कुछ सीमा तक तो हो सकता है कि वे क्षमा करें परन्तु उसके पश्चात् स्थिति अत्यन्त दुष्कर हो जाती है।

परन्तु मुझे लगता है कि लोग इस बात को महसूस ही नहीं करते कि श्री शिव क्या हैं। दक्षिणी भारत में दो प्रकार के भक्त हैं शिव भक्त और विष्णु भक्त। वो परस्पर लड़ रहे हैं। आजकल तो ये लड़ाई बहुत कम है। विष्णु का कार्य आपको आत्म साक्षात्कार देना, मानव को मोक्ष देना, उसका उत्थान करना है परन्तु यदि आप अच्छाई को और धर्म को छोड़ दें तो श्री शिव आपके जीवन में प्रवेश करते हैं। हमें ये बात समझनी चाहिए कि हम उनकी शक्तियों

से घिरे हुए हैं, उन्हीं की शक्तियों से बने हुए हैं। केवल शक्ति (देवी) आपकी रक्षा करती है। लेकिन कुछ सीमा तक, वे भी शिव की इच्छा के विरुद्ध नहीं जा सकतीं, इनकी अवहेलना नहीं कर सकतीं।

आजकल आप देखते हैं कि बहुत से लोग राजनीति में आ रहे हैं। ये सब पैसा बनाने के धंधे हैं। ये राजनीति नहीं है। ये सभी लोग पैसा बनाने में जुटे हुए हैं। वे समाज का हित नहीं करते, किसी भी तरह से नहीं करते। या तो वो भय की स्थिति में होते हैं या असंयम की। इस प्रकार से वो आचरण करते हैं मानो परमात्मा का उन्हें भय ही न हो, अपने पर परमात्मा की दृष्टि का उन्हें भय ही नहीं होता। सम्भवतः उन्हें इस बात का ज्ञान ही नहीं है श्री शिव की दृष्टि सदैव उन पर होती है। श्री शिव सभी को देख रहे हैं चाहे आप आस्ट्रेलियन हों, या अंग्रेज़ हों या भारतीय। आप चाहे जिस धर्म का अनुसरण करें वो आपको देख रहे हैं। ये बात व्यक्ति को समझ लेनी चाहिए और जब ये बात आप समझ लेंगे तो आप स्वीकार कर लेंगे कि आपको भले तथा धार्मिक बनना है। आपको उच्च चरित्र का व्यक्ति होना है। क्यों लोग उच्च चरित्र की बात करते हैं। इस बात को समझने का प्रयत्न करें। जब लोगों का विश्वास ही इसमें नहीं है तो इन दिनों ये मूर्खता है। लोग सभी प्रकार के कार्य कर रहे हैं, शराब पी रहे हैं, पैसे का खेल खेल रहे हैं। परमात्मा के भय के बिना, उनके दण्ड की चिन्ता किए बिना लोग सभी कुछ कर रहे हैं। यह प्रकोप श्री शिव से आता है।

यद्यपि आप सब मेरे बच्चे हैं फिर भी मैं आपको चेतावनी देती हूँ कि सावधान रहें। अपने हर कदम को ठीक से जाँचें परखें। निःसन्देह आपको आश्रय देने के लिए, आपको सहायता देने के लिए, आपकी रक्षा करने के लिए मैं यहाँ हूँ। परन्तु मैं भी श्री शिव की आज्ञा के विरुद्ध, उनसे परे नहीं जा सकती। श्री शिव की शक्ति, उनकी सत्ता ऐसी है। **उनकी पूजा करने का अर्थ है अच्छाई की पूजा करना।** ये अच्छाई करुणा, प्रेम, क्षमा या कुछ भी हो सकती है श्री शिव को केवल भले लोग अच्छे लगते हैं और उन्हीं की वो रक्षा करेंगे।

उदाहरण के रूप में कुछ लोग अत्यंत सत्ता लोलुप हैं। कुछ धन लोलुप हैं और कुछ सत्ता लोलुप। सत्ता लोलुप लोगों का लक्ष्य भी कई बार पैसा बनाना होता है। वो सहज में नहीं रहेंगे। वे निकाल दिए जाऐंगे। वो ऐसी बुराइयाँ करते हैं, और फिर आकर क्षमा मांगेंगे और कहेंगे श्रीमाताजी कृपा करके हमें क्षमा कर दें, हमसे ये गलती हो गई। ऐसा कुछ भी करने का प्रयत्न न करें। निःसन्देह मैं तो आपको क्षमा करती हूँ। परन्तु श्री शिव क्षमा नहीं करेंगे, वे क्षमा नहीं करेंगे। वे आपको दण्ड देंगे और तब आप मेरे पास आकर कहेंगे श्रीमाताजी आप हमारी रक्षा कीजिए!" ये कार्य बहुत कठिन है क्योंकि श्री शिव के शिकंजे बहुत कठोर हैं। परन्तु श्री शिव अत्यन्त क्षमाशील

देव भी हैं। वो आपके बहुत से अपराधों को क्षमा करते हैं। मेरे कारण से भी वो आपको क्षमा करते हैं। परन्तु यदि आप अपराध किए चले जाऐं तो कुछ समय बाद जब वो बागडोर अपने हाथ में लेते हैं तो न कोई क्षमा होती है न बचाव।

मैं आपको डराना नहीं चाहती, मैं आपको सत्य बताना चाहती हूँ। यही सत्य है। आप लोगों को सज्जन बनने का प्रयत्न करना चाहिए। आपको वास्तव में उच्च चरित्र मानव बनने का प्रयत्न करना है। मुझे बताया गया है कि सहजयोग में भी कुछ लोग अनाधिकृत रूप से पैसा इधर–उधर करने में लगे हुए हैं। उनमें से कुछ बहुत ही दुष्चरित्र हैं वे लड़कियों के पीछे दौड़ते हैं, लड़कियों को ताकते हैं, सभी प्रकार की बुराईयाँ करते हैं। इन्हीं चीज़ों ने पश्चिम के लोगों को नष्ट किया है। हमारे भारतीय लोग भी उनसे यही सब सीख रहे हैं। हमें अपना सम्मान करना चाहिए। यदि हम अपना सम्मान नहीं करते, दुर्व्यवहार करने का प्रयत्न करते हैं तो कुछ नहीं हो सकेगा। आपकी कुण्डलिनी को उठाकर मैं आपकी सहायता कर सकती हूँ परन्तु यदि आप बहुत अधिक गर्त में चले जाते हैं तो एकादश रुद्र पकड़ जाएगा, इसमें कोई संदेह नहीं है। आपके मस्तक पर ये बहुत बड़ी रुकावट बनाई गई है, एकादश रुद्र। और आजकल यह अत्यन्त गतिशील है, अत्यन्त प्रभावशाली है। जितने भी रोग उत्पन्न हो रहे हैं ये सब असाध्य हैं और सभी एकादश के कारण हैं। सभी भूत बाधाऐं भी इसी के कारण हैं।

उस दिन मैं किसी से मिली वह बहुत ही पकड़ा हुआ था। उस पर एकादश गतिशील था। मैंने पाया वह किसी चीज़ से बुरी तरह प्रभावित था। मैं उसका नाम नहीं लेना चाहती परन्तु हमने देखा है कि ये चीज़ें ठीक नहीं हैं। सभी धर्मों में लोग मूर्खता पूर्ण धारणाएं फैला रहे हैं। इसके विषय में यदि आपको विवेक नहीं है तो कोई आपकी सहायता नहीं कर सकता। आपमें इस बात का पूर्ण विवेक होना चाहिए कि क्या ठीक है और क्या गलत। केवल तभी शिव आपके साथ हैं। परन्तु यदि आप ऐसी मूर्खतापूर्ण चीज़ों में फँसेंगे तो, मैं अवश्य कहूँगी कि ये आत्मघातक हैं। यह विनाशकारी आत्मा श्री शिव की शक्ति है। यहाँ आत्मा से हमारा अभिप्राय शिव की शक्ति है।

बहुत सी विधियों से वे विनाश करते हैं। व्यक्ति का सम्मान समाप्त हो सकता है, स्वास्थ्य खराब हो सकता है, उसका वैभव समाप्त हो सकता है और जब तक वह पूर्णतः नष्ट होकर उसका बोरी बिस्तर नहीं बँध जाता तब तक उसके साथ कुछ भी घटित हो सकता है। मैं ऐसे लोगों को जानती हूँ जो मृत्युशय्या पर पड़े हुए भी पैसों की बातें करने लगते हैं। कितना धन उसे मिलना चाहिए? किस प्रकार उन्हें ये धन मिलेगा आदि–आदि। परमात्मा या आत्मसाक्षात्कार की बात करने के स्थान

पर वे इस प्रकार की बात करते हैं। ये आम बात है। आप यदि श्री शिव को देखें तो उनके पास कुछ भी नहीं है। उन्हें किसी चीज़ की आवश्यकता भी नहीं है समर्पण आदि के रूप में आप जो भी कुछ उन्हें दें वे इसे स्वीकार नहीं करते ये सब वे शक्ति को दे देते हैं – "आपकी जो इच्छा हो इसका करें।"

आपके हित के लिए, आपकी प्रसन्नता के लिए वे (शक्ति) ही सभी कुछ कार्यान्वित कर रही हैं। शिव को कोई चिन्ता नहीं। इस स्थिति में आपको श्री शिव को प्रसन्न करना होगा। वो आपको प्रसन्न करने का प्रयत्न नहीं करेंगे, आपको जी जान से उन्हें रिझाना होगा। श्री शिव का व्यक्तित्व अत्यन्त जटिल है। कुरान में अल्लाह या शिव के विषय में अलग से नहीं लिखा गया उनमें कोई भेद नहीं किया गया क्योंकि हजरत मोहम्मद साहब ने जिन लोगों को समझाना था वो सब अशिक्षित व अज्ञानी लोग थे। इसलिए उन्होंने ये सारी बारीकियाँ नहीं लिखीं कि परमात्मा के भिन्न रूप हैं इसलिए वे केवल अल्लाह को जानते हैं। फिर भी वो कोई ऐसा कार्य नहीं करते जिससे कार्यों और नौकरियों के कारण ऊँच–नीच का भेद प्रकट हो। इस बात से मैं सहमत हूँ कि श्री शक्ति ही प्रेम करती हैं परन्तु वे बहुत जल्दी नाराज़ भी हो जाती हैं और जब नाराज़ हो जाएं तो उन्हें सम्भालना बहुत कठिन होता है। आप लोग सहजयोगी हैं इसलिए मुझे आपको बताना है कि श्री शिव को प्रसन्न करने के गुण स्वयं में विकसित करें। अभी तक आपमें बहुत अधिक इच्छाएं हैं, बहुत अधिक लालसाएं हैं ये सब अनावश्यक हैं। निःसन्देह मैं चाहती हूँ कि आप सब अच्छी तरह से सुन्दरता पूर्वक जीवनयापन करें–जंगलों में जाकर हिप्पियों की तरह से व्यवहार करके मूर्खतापूर्वक नहीं। आपके हृदयों से भौतिक चीज़ों के प्रति लिप्सा समाप्त होना भी आवश्यक बात है। शिव–भक्त न तो धन की चिन्ता करते हैं और न ही उन्हें इसका ज्ञान होता है। वो तो अत्यन्त उदार होते हैं। अत्यन्त उदार। जिस प्रकार से शिव–भक्त कार्य करता है लोग कहते हैं कि वह मूर्ख है। परन्तु मैं ऐसा नहीं सोचती। शिव–भक्त की यह पहचान नहीं है। शिव भक्त की पहचान तो यह है कि उसे पैसे में कोई दिलचस्पी नहीं होती। वह अत्यन्त उदार होता है। आप उससे कुछ भी माँगे वह तुरन्त दे देगा।

श्री महावीर ऐसे ही थे। एक बार महावीर अपने उद्यान में ध्यान–धारणा के लिए गए और भिखारी के रूप में श्री कृष्ण (श्री विष्णु) उनके सम्मुख आए और बोले "देखो, मेरे पास वस्त्र नहीं हैं तुम्हारे पास यह वस्त्र हैं। ये आधा वस्त्र तुम मुझे क्यों नहीं दे देते?" श्री महावीर ने कहा, "ठीक है, आप ये वस्त्र ले लो, पूरा ही वस्त्र ले लो। उन्होंने कहा कि मेरा घर समीप है और मैं घर जाकर वस्त्र पहन लूंगा। उन्होंने नग्नता नहीं दर्शाई, पत्तों से स्वयं को ढककर वे

चले गए। परन्तु इन जैनियों को यदि आप देखें तो ये श्री महावीर के बड़े–बड़े पुतले बनाते हैं जिनमें उन्हें नग्न दर्शाया जाता है। मेरा कहने से अभिप्राय है कि यह मानव–मस्तिष्क की विकृति है। हमें ये बात समझनी चाहिए कि श्री महावीर ने ऐसा क्यों किया। वे ऐसे निर्लिप्त थे कि अपना सर्वस्व दे डालने में उन्हें कोई बुराई नज़र नहीं आती थी। ये सब उन्होंने दिखावे के लिए नहीं किया, उदारता के कारण किया। ये सब लोग नहीं समझते। परन्तु ये जैनी बिल्कुल भी उदार नहीं हैं।

अतः इन महान अवतरणों के गुणों को समझा नहीं जा सकता क्योंकि एक प्रकार का भ्रम बना ही रहता है। उदाहरण के लिए श्री शिव सदैव बहुत कम वस्त्र पहनते हैं–बहुत ही कम और वो खाते क्या हैं? कोई नहीं जानता, उनकी इच्छा क्या है और वे चाहते क्या हैं ये बात भी कोई नहीं जानता। महान संगीतज्ञ उनके सम्मुख गाते हैं, ठीक है। कोई विक्षिप्त व्यक्ति उनके सम्मुख गाता है तो भी ठीक है। उन्हें इससे कोई लेना–देना नहीं। इस बात की उन्हें कोई चिन्ता नहीं कि राग कैसा है और इसके स्वर क्या हैं, यह ठीक भी है या नहीं। वो इन सब चीज़ों से ऊपर हैं। जिन औपचारिकताओं में हम फँसे हुए हैं वे इन औपचारिकताओं से ऊपर हैं। वे साक्षात आध्यात्मिकता हैं। अन्य चीज़ों से ऊपर हैं। आप चाहे संगीतकार हैं या कलाकार या कुछ अन्य, वो इसका आनन्द लेंगे। वो आनन्द–भोक्ता हैं और हर सहज चीज़ का, हृदय से भेंट की हुई वस्तुओं का वे आनन्द लेते हैं। कोई भी अभिव्यक्ति जो हृदय से की गई है, वो उसका आनन्द लेंगे। वो बन्धनों में फँसे हुए नहीं हैं कि ये चीज़ आधुनिक होनी चाहिए, ऐसी होनी चाहिए, वैसी होनी चाहिए। वे बन्धनमुक्त हैं। मानव की तरह से वे ये नहीं सोचते कि हमें हर चीज़ अत्यन्त सावधानी पूर्वक बनानी चाहिए जो पूरी–पूरी आ जाए। चाहे कला हो या कुछ अन्य चीज़ चाहे, इसे किसी ने कितने ही हृदय पूर्वक बनाया हो, मनुष्य उस कलाकार को हतोत्साहित करने का प्रयत्न करता है।

मैंने ऐसे लोग देखे हैं जो इस प्रकार से बन्धनों में फँसे हुए हैं। परन्तु श्री शिव के साथ कोई भी बन्धन नहीं है। यही कारण है कि उन्हें मस्तमौला कहा जाता है। आपके मस्तिष्क में यदि किसी भी प्रकार का कोई बन्धन है तो आप शिव भक्त नहीं हैं। ये बात ठीक है कि आप को ठीक से वस्त्र पहनने चाहिएं, सभी कुछ ठीक से करना चाहिए। परन्तु आपमें ये बन्धन नहीं होना चाहिए कि यदि मैंने ऐसा नहीं किया तो मैं जाति से बाहर हो जाऊंगा या मुझे फैशन में पिछड़ा हुआ मान लिया जाएगा। स्वीकार न कर पाना लोगों के लिए कठिन कार्य है। आजकल सभी प्रकार के फैशन पनप रहे हैं मैं उनसे पूछती हूँ, "यह क्या है? ये फैशन है।" क्या परमात्मा इस फैशन के पीछे हैं या कोई देवी–देवता आपको ये

फैशन बता रहे हैं? फैशन आज आता है और कल चला जाता है।

अतः मेरे कहने का अभिप्राय ये है कि यदि आप शिव की भक्ति करना चाहते हैं तो आपको बन्धन मुक्त होना होगा। आप लोग सहस्रार की दुनिया में रह रहे हैं। अब यदि किसी ने ठीक से वस्त्र नहीं पहने हुए तो बस समाप्त! किसी ने बहुत ही दिखावे वाले वस्त्र पहने हैं तो समाप्त। मानव में सभी की आलोचना करने की शक्ति है किसी की आलोचना करना कोई विशेष बात नहीं है। अपनी चैतन्य–लहरियों पर यदि आप इसे परखें तो आप इसे समझ जाऐंगे। परन्तु लोग चैतन्य–लहरियों पर नहीं देखते क्योंकि उनका तो सोचना ये है कि ये फैशन नहीं है, वो फैशन नहीं है।

आप मुझे बताएं कि श्री शिव का क्या फैशन है? क्या वो भी कोई फैशन करते हैं? आप जो चाहे उन्हें भेंट करें वो प्रसन्न हो जाते हैं। खाने के लिए जो चाहे आप उन्हें भेंट करें वो खा लेते हैं। वे प्रशंसा की शक्ति से परिपूर्ण हैं क्योंकि वे आनन्द की प्रतिमूर्ति हैं। वे साक्षात शान्ति और आनन्द हैं। आप यदि शिवभक्त हैं तो आपमें इस प्रकार का कोई बन्धन नहीं होना चाहिए। प्रायः मैं अत्यन्त सादी साड़ियाँ पहनती हूँ, अत्यन्त सादी। परन्तु लोग सोचते हैं कि मैं अत्यन्त निर्धन महिला हूँ। मैं निर्धन हूँ क्योंकि मैं धन की चिन्ता नहीं करती। धन की मुझे बिल्कुल भी परवाह नहीं है। अतः हमें समझ लेना चाहिए की श्री शिव सबसे गरीब देवता हैं। वे किसी प्रकार के अलंकार नहीं धारण करते और न ही इस प्रकार का कुछ पहनते हैं। अपने शरीर को बिना इन सब चीजों के भी बनाए रखते हैं। वे आनन्द की प्रतिमूर्ति हैं। पूर्ण आनन्द का अवतरण।

अतः आनन्द शिव भक्त का एक अन्य गुण होना चाहिए। हर चीज़ का उनको आनन्द लेना चाहिए। जो भी कुछ आप देखते हैं, जिस किसी को भी आप देखते हैं, आप केवल इतना कर सकते हैं कि आलोचना करने का मानवीय गुण त्याग दें। अन्य लोगों की आलोचना करना छोड़ दें। जैसे कोई अंग्रेज़ यदि किसी भारतीय घर में जाएगा तो वो कहेगा, "हमें ये पसन्द नहीं है।" "हाँ, क्या, आपको क्या पसन्द नहीं है?" "हमें कालीन पसन्द नहीं आया" 'मुझे पसन्द नहीं आया' ये बात कहना ही आपकी शक्ति के विरुद्ध है। और मान लो कोई अमरीकन किसी अंग्रेज़ के घर जाएगा तो कहेगा मुझे ये पसन्द नहीं है, ये आम बात है। सभी लोग कहते हैं मुझे ये पसन्द नहीं है, मुझे वो पसन्द नहीं है। ये कहने वाले आप कौन हैं कि मुझे ये पसन्द नहीं है, या मुझे ये पसन्द है? लोगों को इस बात का ज्ञान नहीं है कि ऐसी बातें कहकर वो ये दर्शाते हैं कि उनमें शिव तत्व नहीं हैं।

कोई व्यक्ति यदि अपनी टाँगों पर चल नहीं सकता तो उसके छड़ी या वहंगियां उठाने में औचित्य है। परन्तु यदि वह कहे

कि मुझे वह व्यक्ति इसलिए पसन्द नहीं है क्योंकि वह छड़ी लेकर नहीं चलता, तो इससे पता चलता है कि वह कितना अहंकारी व्यक्ति है। वो स्वयं तो छड़ी का उपयोग कर रहा है परन्तु किसी भी लोकतांत्रिक देश में क्या वह नियम बनाना चाहता है कि सब छड़ी पकड़ कर चलें? यह कार्य बहुत कठिन है। पश्चिम में ये आम बात है कि इस प्रकार का टोप पहनना है, इस प्रकार के वस्त्र पहनने हैं, या इस प्रकार का चुर्रट लेकर चलना है। ये सभी बन्धन है। आजकल महिलाओं ने अजीबो–गरीब केश शैलियाँ बना ली हैं। क्योंकि वो अपने बालों में वे तेल नहीं डालती, बालों में वे किसी प्रकार की चिकनाई नहीं चाहती। उन्हें अगर किसी से मिलने जाना हो तो पहले वे अपने बालों को धोएंगी। मैं नहीं सोचती कि ऐसा करना अच्छा लगता है। निःसन्देह मैं ये भी नहीं कहती कि आप के चेहरे पर या कानों पर बहुत सा तेल लगा हुआ हो। परन्तु ये सब करना इतना आवश्यक क्यों है?

जीवन में एक अन्य चीज़ भी है कि हम अपने तक ही सीमित हैं, हम लोगों को प्रभावित करना चाहते हैं। मैं जो भी वस्त्र पहनूँ उससे अन्य लोग प्रभावित हों। मान लो कि लोग प्रभावित हुए तो क्या? कोई साँप यदि आपके समीप से निकला तो आपको काट लेगा चाहे आपने कोई भी वस्त्र पहने हुए हों या आपका सम्बन्ध किसी भी देश से हो। इस प्रकार की पहचान शिव भक्त को शोभा नहीं देती। शिव भक्त को तो आनन्दातिरेक में डूबा हुआ होना चाहिए। बालों की शैली के बारे में, वेश–भूषा के बारे में बहुत ज्यादा सावधानी मेरी समझ में नहीं आती। इन सब चीज़ों से उनको क्या लाभ होता है? कुछ भी नहीं। क्या वे लोकप्रिय हो जाते हैं? और इस प्रकार की उथली लोकप्रियता का क्या लाभ है?

आपमें सम्मान होना चाहिए। अपने अस्तित्व का सम्मान। केवल मानव होने का ही नहीं सहजयोगी होने का भी सम्मान होना चाहिए। आप सहजयोगी हैं। हम शिव भक्त हैं, हमें इन चीज़ों की बिल्कुल भी चिन्ता नहीं करनी है। चाहे जो भी हो शिव हमारे अन्दर विद्यमान हैं और हमारे अन्दर विद्यमान उनकी शक्ति कुण्डलिनी के तेज से हम तेजस्वी हैं। **आपने चाहे कितने अच्छे वस्त्र पहनें हों या जो भी हों यदि आपकी चैतन्य लहरियाँ खराब हैं तो बाकी सब चीज़ें व्यर्थ हैं।** लोगों को यदि आप उनकी चैतन्य लहरियों से नहीं परख सकते तो उनके अटपटे वस्त्र और मूंछें व्यर्थ हैं। सहजयोग में आपके मूल्य भी सहज होने चाहिए। मैंने लोगों को देखा है, "मुझे उनका घर पसन्द नहीं है, मुझे ये पसन्द नहीं है मुझे वो पसन्द नहीं है। 'मुझे पसन्द नहीं है' ये वाक्य निषिद्ध है। सहजयोगियों को ये वाक्य त्याग देना चाहिए, आपको यदि कोई चीज़ पसन्द नहीं है तो आप सहजयोगी नहीं हैं। अब मान लो कोई व्यक्ति सहज–विरोधी है परन्तु ये

कहने से आपको क्या लाभ है कि 'मुझे पसन्द नहीं है'? यह तो अपनी शक्ति को बर्बाद करना है। इसके कारण सहजयोग में मैंने देखा है लोगों ने मेरे लिए बहुत सी समस्याएँ खड़ी कर दी, केवल इसलिए क्योंकि वे स्वयं तक सीमित हैं। ये व्यक्ति खराब है, वह महिला खराब है, वह ऐसा है, वह वैसा है। कई बार मुझे आश्चर्य होता है क्योंकि जब वो लोग मेरे पास आते हैं तो मैं हैरान होती हूँ कि वो तो बहुत अच्छे लोग हैं! **परन्तु कुछ लोग अपने तक ही सीमित हैं। मैंने ऐसे भी लोग देखे हैं जो सहज सभाओं में आने की, पूजाओं में आने की भी चिन्ता नहीं करते। कुल मिलाकर ग्याहरह पूजाएं होती हैं परन्तु वे नहीं आते। इसलिए कि वे व्यस्त हैं। कम से कम एक पूजा पर तो उन्हें आ जाना चाहिए।** जो लोग शिव भक्त हैं उन्हें पूजाओं के अतिरिक्त किसी चीज़ का आनन्द नहीं आता, किसी भी चीज़ का नहीं। उनका पूर्ण अस्तित्व ही शिव भक्ति से सराबोर होता है। उनके लिए केवल वही कार्य महत्वपूर्णतम है।

सहजयोग में कुछ ऐसे भी लोग हैं जो यहाँ पैसा बना रहे हैं। ये अत्यन्त गलत है, अत्यन्त गलत है, अत्यन्त गलत है। **सहजयोग आपको पुण्य और आशीर्वाद देने के लिए है। ये बात यदि आपके मस्तिष्क में नहीं है तो अच्छा होगा आप सहजयोग छोड़ दें।** आप अत्यन्त आसानी से कोई भी व्यापार या उल्टा-सीधा कार्य कर सकते हैं। जब तक आप जेल में नहीं चले जाते तब तक आप इसमें लगे रहें। परन्तु अपनी आध्यात्मिक शक्तियों का आनन्द लेने के लिए आपको कुछ चीज़ें सीखनी होंगी और उनमें से एक है अपने इस बन्धन से मुक्ति पाना-'मुझे पसन्द नहीं है या मुझे पसन्द है।' यह वाक्य आपकी ज़बान से चला जाना चाहिए। पसन्द और नापसन्द केवल सीमित दृष्टि वाले लोगों की होती है। आपको सराहना करनी सीखनी चाहिए। आपकी सराहना करने की शक्ति इस बात को दर्शाएगी कि आध्यात्मिक रूप से आप कितने समृद्ध हैं और आपकी अवलोकन शक्ति यह दर्शाएगी कि आप कितना अवलोकन करते हैं। उदाहरण के रूप में कुछ लोग आकर मुझे बताते हैं, "वह महिला मुझे अच्छी नहीं लगी, उसने बड़ी अजीब सी साड़ी पहनी हुई थी।" यह सब क्या है? "मुझे वह पसन्द नहीं आई क्योंकि उसने अपना हाथ अपने सिर पर रखा हुआ था।" तो क्या हुआ? क्योंकि लोगों के विषय में आपकी अपनी कल्पनाएं हैं और आप चाहते हैं कि लोग वैसे हों। यदि वे आपकी कल्पना अनुरूप नहीं हैं तो वे आपको अच्छे नहीं लगते। कोई भी चाहे आपको पसन्द हो या न हो वह परिवर्तित होने वाला नहीं है। तो क्यों अपनी शक्ति को बर्बाद करना है? कई बार ऐसे संगीतकार होते हैं जो बहुत अच्छे नहीं होते। मुझे याद है कि एक बार घर जाकर मैंने अपने पिताजी से पूछा था, "ये संगीतकार कैसा गाता है?" उन्होंने उत्तर दिया, "वह बहुत

साहसी है, बहुत सी साहसी।" मैंने कहा, "क्यों, क्या हुआ?" कहने लगे, "वो बिना किसी चिन्ता के गाता है और कभी–कभी तो बेसुरा भी हो जाता है। कई बार उसे ताल का भी ध्यान नहीं रहता, परन्तु कोई बात नहीं इसके बावजूद भी वह गाता रहता है। वह बहुत साहसी है, बहुत ही हिम्मतवाला है। तो मैंने देखा कि वे इस प्रकार से सराहना किया करते थे। इस व्यक्ति ने जब गाना शुरू किया तो शुरू से ही वह ऐसे ही गा रहा था परन्तु मेरे पिताजी वाह, वाह करके उसे उत्साहित कर रहे थे। मैंने अपने पिताजी में ये गुण देखे हैं, किस प्रकार से वह सहन किया करते थे–केवल सहन ही नहीं करते थे, सराहना भी करते थे। सभी प्रकार की चीज़ों की सराहना किया करते थे। सहजयोगियों में यदि सराहना करने का यह गुण हो तो उन्हें भी हर चीज़ का आनन्द आएगा। परन्तु आप लोग अपने आनन्द का गला घोंट देते हैं। क्या आपको इस बात का ज्ञान है? यहाँ पर आप भिन्न प्रकार के लोग हैं, भिन्न वेशभूषाएं हैं, भिन्न परिवार हैं और आप भिन्न देशों से सम्बन्धित हैं। मेरे लिए आप सहजयोगियों, मेरे बच्चों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं, केवल इतना ही। आपके वस्त्रों से, आपकी बालों की शैली से मैं आपका आँकलन नहीं करती। ये सभी आधुनिक चीज़ें बन्धनों में फँसाने वाली हैं। इस प्रकार से ये आपको बन्धनग्रस्त करती है कि आप गैर ज़िम्मेदार हो जाते हैं। सहजयोगी के रूप में भी आप गैर ज़िम्मेदार बन जाते हैं।

सहजयोग आपकी सबसे पहली और सर्वोपरि ज़िम्मेदारी है। आपको इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि ये कार्य क्या है? ये अत्यन्त महान कार्य है–पूरे विश्व को परिवर्तित करना – मेरा यही स्वप्न है। आज इस वृद्धावस्था में भी मैं यही सोचती हूँ। यदि मेरा ये स्वप्न है तो आपका दृष्टिकोण क्या होना चाहिए? आप सब लोगों को जी जान से सहजयोग प्रचार – प्रसार में लग जाना चाहिए। मैं आपको कायाकल्प करने के लिए, और अधिक शक्ति देने के लिए इन पूजाओं में बुलाती हूँ परन्तु यदि इसे महान आशीर्वाद समझकर आप घर पर ही बैठे रहते हैं तो इसका कोई लाभ नहीं। सहजयोग आपको अवश्य फैलाना चाहिए।

जब उन्होंने मुझे बताया कि लखनऊ में सिर्फ 200 सहजयोगी हैं तो तो मुझे बहुत हैरानी हुई। ये कैसे हो सकता है। पहली बार मैं जब लखनऊ गई थी तो वहाँ 3000 सहजयोगी थे और तब किसी सभागार आदि का भी प्रबन्ध न था। अचानक इतने सारे लोग चले गए, क्या आप इस बात की कल्पना कर सकते हैं! ये कैसे हो सकता है कि वहाँ केवल 200 सहजयोगी हों। या तो आप झूठ बोल रहे हैं या आप बेकार हैं।

अतः सहजयोग का प्रचार–प्रसार करना सभी सहजयोगियों की प्रथम ज़िम्मेदारी

है। आपने कितने लोगों को आत्म–साक्षात्कार दिया? कहाँ पर आपने सहजयोग की बात की। मैंने देखा है कि हवाई जहाज में यात्रा करते हुए भी कोई यदि मेरे साथ बैठा हो तो वह मेरे सम्मुख अपनी गुरु की प्रशंसा के पुल बाँध देता है। निर्लज्जता पूर्वक खुल्लम–खुल्ला इन भयानक गुरुओं की बात करता है और आप लोग सहजयोग की बात करते हुए भी शर्माते हैं। जब तक जन कार्यक्रम न हों, कोई विशेष कार्यक्रम न हों, आप सहजयोग की बात नहीं करते। दूसरे आपके पास सहजयोग के लिए समय भी नहीं है। आप सब व्यस्त लोग हैं।

अतः आप यदि श्री शिव की भक्ति करना चाहते हैं, उनका आशीर्वाद, उनकी सुरक्षा चाहते हैं तो आपको उच्च स्तर का सहजयोगी बनना होगा। इस चीज़ का पता तब लगेगा जब आप जी जान से सहजयोग प्रचार के लिए निकल पड़ेंगे। मैं बहुत प्रसन्न हूँ कि आस्ट्रेलिया में सहजयोग बहुत फैला है। मैं नहीं जानती वहाँ क्या हुआ, आस्ट्रेलिया जैसे दूर–दराज देश में। आरम्भ में तो वहाँ कुछ परेशानियाँ हुई परन्तु अब वहाँ सहजयोग फैल गया है। आस्ट्रिया में भी सहजयोग फैला है और इटली में भी। वैसे सहजयोग फैलता ही नहीं, क्या कारण है? इसका कारण ये है कि अगुआगण पूरी तरह से प्रयत्नशील नहीं हैं। इंग्लैण्ड में मैं उत्तर से दक्षिण, पूर्व से पश्चिम सभी दिशाओं में गई परन्तु वहाँ पर बहुत ही कम सहजयोगी हैं। आपको विश्वविद्यालयों में युवा लोगों के पास जाना होगा। यदि हिप्पी मत फैल सकता है तो सहजयोग क्यों नहीं फैल सकता? हिप्पी मत जंगल की आग की तरह से फैला तो सहजयोग क्यों नहीं?

इन सभी चीज़ों के विषय में मुझे आपको चेतावनी देनी है–सावधान हो जाएं। आपको यदि आत्म–साक्षात्कार मिल गया है तो आपकी जिम्मेदारी भी है, अन्य लोगों को आत्म–साक्षात्कार देना और सहजयोग का प्रचार करना।

आप लोग यदि यह कार्य नहीं कर सकते तो परमात्मा ही आपकी रक्षा करें। इसके आगे मुझे कुछ नहीं कहना। "आपको अन्तर्वलोकन करना होगा। मैंने सहजयोग के लिए क्या किया, सहजयोग से मैंने क्या पाया?" मुझे विश्वास है कि इस शिव पूजा के पश्चात् आप स्वयं को शिव तत्व के प्रति समर्पित कर देंगे। शिव तत्व कभी उत्तेजित नहीं होता, यह अत्यन्त प्रचण्ड है। बहुत ही शक्तिशाली है। आपको समर्पित होना है। इसके सम्मुख नतमस्तक होना है। अन्य सभी कार्यों से, सभी गतिविधियों से यह कहीं उच्च है।

इसी के साथ मैं श्री शिव से कहती हूँ कि वे आपको आशीर्वाद दें, अपना पूर्ण आशीर्वाद ताकि आप सब लोग भी श्री शिव के व्यक्तित्व में परिवर्तित हो जाएं।

परमात्मा आपको धन्य करें।

जन्म दिवस पूजा

निर्मल धाम, दिल्ली, 21.3.2002

(परम् पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन)

मैं इन्हें प्रेम के विषय में बता रही हूँ, सर्वशक्तिमान परमात्मा के सर्वव्यापी प्रेम के विषय में। उन्होंने ही सारा सृजन किया है पूरा वातावरण बनाया है। प्रेम की पूर्ण भावना दी है। परन्तु यह उन्हीं लोगों के लिए है जो बच्चों की तरह से अबोध हैं। यदि आप घृणा में परिपक्व हैं तो कोई आपकी रक्षा नहीं कर सकता। अपनी घृणा को न्यायोचित ठहराने के लिए आपके पास अनगिनत तर्क मिल जाएंगे। जिस सीमा तक चाहें इस घृणा को तर्कसंगत ठहराते रहें। हमारा देश जो कि अत्यन्त परिपक्व एवं शान्तिप्रिय देश माना जाता है यहाँ भी ऐसे लोग हुए हैं जिनका मार–धाड़ और हत्या में ही विश्वास था। इसे मार दो, उसे मार दो। अतः इन चीज़ों में विश्वास न करने वाले इस देश में भी लोग बहुत पुराने समय से भिन्न प्रकार की हिंसा करते चले आ रहे हैं। परन्तु मूलतः हम शान्तिप्रिय लोग हैं क्योंकि शान्ति के बिना

उत्क्रान्ति हो ही नहीं सकती। पूर्ण शान्ति का होना आवश्यक है। आपके हृदय में यदि शान्ति है, आपके चहूँ ओर यदि शान्ति है, केवल तभी आप सुन्दर राष्ट्र के रूप में उन्नत हो सकते हैं, किसी भय या दबाव के कारण नही। परन्तु आपके हृदय में यदि पूर्ण शान्ति है तभी न केवल आप भयमुक्त होते हैं परन्तु आपके अन्दर से शान्ति भी प्रसारित होती है। **ऐसा व्यक्ति शान्ति प्रसारित करता है। उसके पास जाने वाले हर व्यक्ति को शान्ति प्राप्त होती है और उसमें शान्ति की भावना आ जाती है।**

आप सभी सहजयोगी हैं आपको आत्म साक्षात्कार मिल चुका है अर्थात आपकी आत्मा प्रेम एवं चैतन्य लहरियों का प्रसार करने लगी है। आप जहाँ भी होंगे शान्तिमय चैतन्य लहरियों का प्रसार करेंगे। शान्ति का आप सृजन करेंगे। शान्ति का सृजन करने की विधियाँ खोज निकालेंगे कि वातावरण में शान्ति किस प्रकार स्थापित करनी है। हमारा इस प्रकार से उन्नत होना महत्वपूर्ण है कि हम शान्ति का सृजन करें, अन्य लोगों को शान्ति प्रदान करें और इसका उदाहरण बन जाएं।

मुझे विश्वास नहीं होता कि दिल्ली में भी इतनी अधिक संख्या में लोग साक्षात्कारी हो सकते हैं। मैंने कभी इसकी आशा न की थी। आरम्भ में तो मुझे तब तक प्रतीक्षा करनी पड़ी जब तक लोगों में मेरे कार्य को समझने का विवेक न आ गया क्योंकि देश का बँटवारा हुआ था जिसमें बहुत से लोगों को जान और माल गँवाने पड़े थे। ये सब मैंने स्वयं देखा है! ऐसी स्थिति में लोग किसी को क्षमा कर पाने में असमर्थ थे।

अतः क्षमा अन्य लोगों के दुःख और तकलीफों को समझने का बहुत अच्छा मार्ग है परन्तु ये गुण आपको अपने अन्दर विकसित करना होगा। क्रोधित और प्रतिशोध की भावना से परिपूर्ण की अपेक्षा आप यदि अपने अन्दर वो शान्ति विकसित कर लें, परमेश्वरी प्रेम के माध्यम से यदि आप वो मानसिक शान्ति प्राप्त कर लें तो आपको कुछ और करने की आवश्यकता नहीं होगी। यही शान्ति आपके हृदय में है इसे महसूस करें। आप शान्त व्यक्ति हैं जल्दी से उत्तेजित होने वाले व्यक्ति नहीं। अपने क्रोध के लिए या लोगों का मिजाज़ बिगाड़ने के लिए आप कोई सफाई नहीं देंगे, आप ऐसा कुछ भी नहीं करेंगे। आप इस क्रोध और मूर्खतापूर्ण प्रतिशोध से ऊपर उठ सकते हैं।

जो लोग आत्मसाक्षात्कारी नहीं हैं उन्हें समझा पाना कठिन है क्योंकि उनसे यदि मैं बात करूंगी तो उन्हें अच्छा न लगेगा। वो यदि आत्मसाक्षात्कार ले लें केवल तभी हम उनसे बातचीत कर सकते हैं।

अतः सर्वोत्तम कार्य यह है कि सहजयोग को फैलाएं। इसे सर्वत्र, सिखों में, मुसलमानों में और इसाईयों में तथा विशेष रूप से हिन्दुओं में फैलाएं क्योंकि आज कल मुझे लगता है हिन्दू लोगों ने भी अपने देश तथा इसकी संस्कृति की समझ पर पकड़ खो

दी है। यही कारण है कि वो प्रतिशोध लेते हैं। इस प्रकार का प्रतिशोध मेरी समझ में नहीं आता। परन्तु क्या किया जाए? लोग उस स्तर तक पहुँच गए हैं, उस अधम स्तर पर, जहाँ वे बहुत सी चीज़ें नहीं समझ पाते।

उदाहरण के रूप में लोग नहीं चाहते कि एक स्थान विशेष पर श्री राम का मन्दिर बने। इसका कारण उनका सहजयोगी न होना है। मैं उन्हें बता सकती हूँ कि यह वही स्थान है जहाँ श्री राम का जन्म हुआ। हमें उनके अवतरण को पूर्ण सम्मान देना चाहिए। यदि वही उनका जन्म-स्थल है तो हम इस तथ्य को चैतन्य-लहरियों पर महसूस कर सकते हैं। तो क्यों इस वास्तविकता, इस सच्चाई को नकारें? केवल इसलिए की आप इस कार्य को नहीं चाहते। उन लोगों से बात-चीत करना बहुत कठिन है।

हमारे लिए समझने की बात ये है कि बाबर ने हमारे लिए क्या किया? बाबर कौन था? बाबर एक विदेशी था जिसने इस स्थान को बनाया तक नहीं। नहीं, उसने नहीं बनाया। ये तो उसकी सेना के किसी अधिकारी ने किया था और इसीलिए इसे बाबरी मस्जिद कहा जाता है।

परन्तु आइए देखते हैं कि इन श्रीमान बाबर के साथ क्या हुआ? उनकी मृत्यु हो गई। परन्तु आए वो विदेश से ही थे। वो तो भारतीय भी नहीं थे। तो भी कोई बात नहीं। परन्तु उस स्थान से उनका क्या लेना-देना? निश्चित रूप से मैं इस बात को जान सकती हूँ और आप सब जान सकते हैं कि बाबरी मस्जिद ही वह स्थान था जहाँ श्री राम का जन्म हुआ।

वहाँ यदि मन्दिर बन जाए तो लोगों को क्या परेशानी हो सकती है। वहाँ मन्दिर बनने से किसी को क्या कष्ट हो सकता है? कहने से मेरा अभिप्राय है कि यह तो केवल सम्मान और भावनाओं का प्रश्न है। मैं श्री राम का नाम लेती हूँ, सभी लोग उनका नाम लेते हैं क्योंकि इससे अत्यन्त सुख और शान्ति मिलती है। परन्तु जिस प्रकार से लोग इस चीज़ को देखते हैं यह अत्यन्त कठिन कार्य है। आप उनसे बात नहीं कर सकते।

अब वे एक अन्य मूर्खता की बात कर रहे हैं कि कश्मीर में मोहम्मद साहब का एक बाल है। अब किसी ने कह दिया है कि यह बाल उनका नहीं है। आप कैसे जानते हैं? ये निर्णय करने का आपका क्या मापदण्ड है कि ये बाल किसका है? आप हैरान होंगे कि मैं जब कश्मीर गई थी तो हम कार से कहीं जा रहे थे। अचानक मुझे बहुत तेज चैतन्य लहरियाँ महसूस हुईं, तब मैंने चालक से पूछा, "तुम कार को इस ओर क्यों नहीं ले चलते?" वह कहने लगा, क्यों? "क्योंकि मैं जाना चाहती हूँ।" वह कहने लगा, "ये एक पुरानी सड़क है और बहुत थोड़े से लोग यहाँ पर रहते हैं" "कोई बात नहीं। आप गाड़ी ले चलो।" वह उस स्थान के समीप पहुँचता गया।

वहाँ पर मुसलमानों के कुछ घर थे हमने उन्हें बुलाया और उनसे पूछा, "यहाँ क्या हो रहा है?" उन्होंने उत्तर दिया, "यह हज़रत बल है।" नाम से ही इतनी शान्ति प्राप्त होती है। यह मोहम्मद साहब का एक बाल था।

अब हिन्दू मोहम्मद साहब के विषय में नहीं जानना चाहते और मुसलमान श्री राम के विषय में। यह आश्चर्य की बात है! सबने अपनी दुकानें खोली हुई हैं और अपनी-अपनी चीज़ें बेच रहे हैं उन्हें इस बात की समझ नहीं है कि जो वो बेच रहे हैं अन्य लोग भी वही बेच रहे हैं। उदाहरण के तौर पर वो अल्लाह का नाम लेते हैं। अल्लाह कौन हैं? सहजयोग के अनुसार अल्लाह श्री विष्णु के अतिरिक्त कोई अन्य नहीं और श्री विष्णु ही श्री राम के रूप में अवतरित हुए। अतः जिस अल्लाह की वे बात करते हैं वे स्वयं श्री राम हैं। इस बात को केवल एक सहजयोगी ही समझ सकता है। मैं जब इसके विषय में बात कर रही हूँ आप यदि अपने हाथ फैलाएं तो ये जानकर आप हैरान होंगे कि कितनी अच्छी चैतन्य-लहरियाँ बह रही हैं क्योंकि श्री राम ही अल्लाह हैं। अपनी मूर्खता के कारण आप उन्हीं का अपमान करने का प्रयत्न कर रहे हैं।

अतः यह मोहम्मद साहब के शिष्यों की मूर्खता है या हिन्दुओं की। हिन्दू भी इस बात को नहीं समझ रहे हैं। किसी तरह से उन्हें यह ज्ञान है कि यह श्री राम का जन्म स्थान है। किसी तरह से। मैं नहीं जानती, हो सकता है किसी ने उन्हें बताया हो, मैं नहीं जानती उन्हें किस प्रकार पता चला परन्तु चैतन्य लहरियों का ज्ञान तो उन्हें नहीं है। अभी तक मुझे ऐसे बहुत से हिन्दू नहीं मिले हैं जिनमें चैतन्य-लहरियाँ हों-मेरा कहने का अभिप्राय इन धर्मान्ध लोगों से है। उन्हें कभी चैतन्य लहरियाँ नहीं आतीं। मैं हैरान होती थी कि किस प्रकार उन्हें पता चला कि यह श्री राम की जन्मभूमि है। हो सकता है किसी तरह से उन्हें इसका पता चल गया हो। परन्तु इससे वे कुछ प्रमाणित नहीं कर सकते। यदि वो आत्मसाक्षात्कारी होते, यदि हमारे उच्च न्यायालय के न्यायाधीश साक्षात्कारी होते, यदि हमारा मंत्रीमण्डल साक्षात्कारी होता तो उनसे बात की जा सकती थी। परन्तु वे सब, मैं क्या कहूँ, पूरी तरह से बाधित लोग हैं। किस प्रकार उन्हें बताया जाए कि ये झगड़ा सिर्फ मूर्खता है! वहाँ श्री राम का मन्दिर बनाया जाना बिल्कुल ठीक है। आप जो चाहे कहते रहें। समस्या ये है कि सर्वप्रथम उन सबको आत्म-साक्षात्कार लेना होगा।

अभी, जब हम ये बात कर रहे हैं, आप देखें कि आत्मसाक्षात्कारी लोग पर्याप्त मात्रा में नहीं हैं। आप सब आत्मसाक्षात्कारी हैं। अभी कोई मुझसे बता रहा था कि वह व्यक्ति जो महन्तों को आत्मसाक्षात्कार दे रहा था, महन्त वो लोग होते हैं जिन्हें सन्त समझा जाता है, कि जब उन महन्तों को

आत्म साक्षात्कार मिल गया तो उनका पर्दाफाश हो गया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह उनका क्या करे? कहीं भी ऐसा घटित हो सकता है चाहे वो इसाई चर्च हो या यहूदी हों। सर्वत्र आपको ये समस्या मिलेगी। आप यदि उन्हें आत्मसाक्षात्कार देंगे तो उनका पर्दाफ़ाश हो जाएगा। अतः उन लोगों को परेशान करने का क्या लाभ है जिनकी श्रद्धा इन महन्तों में है और जो इन्हें बहुत महान समझते हैं। इन लोगों को केवल चैतन्य लहरियों के माध्यम से ही समझा जा सकता है। परन्तु प्रेम के वशीभूत होकर मैं उन्हें बता नहीं सकती कि आप लोग आत्मसाक्षात्कारी नहीं हैं। श्री राम या मोहम्मद साहब के विषय में बातें करना आपका काम नहीं है। वे आपसे बहुत परे हैं।

अब समस्या अज्ञानियों तथा ज्ञानवान लोगों में है। पहले इनकी दूरी बहुत अधिक थी। कोई एक व्यक्ति आत्मसाक्षात्कारी हुआ करता था, तो लोग उसे पत्थर मारा करते थे, पीटते थे तथा सभी प्रकार से सताते थे। अब आप लोग बहुत बड़ी संख्या में हैं। इस अवस्था में भी आप यदि कोई प्रदर्शन करें तो कोई आपको नहीं सुनेगा। मैं आपसे एक ही प्रार्थना करूंगी। अधिक से अधिक लोगों को आत्मसाक्षात्कार दें–इन तथाकथित आध्यात्मिक लोगों को नहीं, सर्वसाधारण लोगोंको–क्योंकि इन तथाकथित आध्यात्मिक लोगों का तो पर्दाफ़ाश हो जाता है, इन्हें साक्षात्कार देने का क्या लाभ है?

यह आम बात है। बहुत से लोगों ने मुझे बताया, "हमने एक पादरी को आत्मसाक्षात्कार दिया, उसका पर्दाफ़ाश हो गया।" "अर्थात क्या हुआ?" "श्रीमाताजी, उसकी पोल खुल गई। उसे कैद में डाल दिया गया।" "अरे! यह तो ज्यादती है। आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने के पश्चात् वह जेल चला गया!"

अतः यह समस्या है। प्रेम में आप पाखण्डी नहीं हो सकते। प्रेम में तो आपको पावन व्यक्तित्व होना होगा। स्वयं को पवित्र करने के लिए संघर्ष करें। आपको परिवर्तित होना है। अब भी यदि आपको क्रोध आता है, अब भी यदि आप में लालच है, अब भी यदि आप में ये दोष बने हुए हैं तो प्रेम कार्यान्वित नहीं होगा। यह कार्य न करेगा।

किसी को भी दिव्य प्रेम करने से पूर्व हमें पावनता का मूल्य समझना होगा। क्यों मैं बच्चों से प्रेम करती हूँ? क्योंकि वे अबोध (निश्छल) हैं। उनमें ये सब दोष नहीं है। जैसे हमारे देश में भ्रष्टाचार महामारी की तरह से फैलने लगा है – महामारी की तरह से। यह साधारण बात नहीं है। किसी को भी आप देखें, हर तीसरे व्यक्ति को भ्रष्टाचार का रोग लगा हुआ है! क्यों? क्योंकि सभी धन–लोलुप हैं। ठीक है। परन्तु उस पैसे से वो करते क्या हैं? उनकी समझ में नहीं आता कि इसे किस तरह से छुपाएं। इस धन को वे किसी मटके आदि में डाल देते हैं और अन्ततः यह सारा धन खो जाता है। ऐसा यदि न भी हुआ तो वे

पकड़े जाते हैं। यह सब बातें महत्वपूर्ण नहीं हैं। महत्वपूर्ण बात तो यह है कि यह लालच होना ही क्यों चाहिए? धनवान लोग निर्धन लोगों की अपेक्षा कहीं अधिक लालची हैं क्योंकि निर्धनों को परमात्मा का कुछ तो डर है! धनवान अत्यंत लोभी हैं। वे सदैव किसी न किसी चीज़ के पीछे दौड़ते रहते हैं। इस दौड़ का कोई अन्त नहीं है। आश्चर्य की बात है कि हमारे इस देश में भी यह रोग लग गया है! इसी रोग के कारण, कुछ लोग सहजयोग को व्यापार बना रहे हैं और सहजयोग से धन एकत्र कर रहे हैं।

यह लालच आपके विकृत दायें पक्ष (Right Side) की देन है और आप इसे न्यायोचित ठहराने लगते हैं। दायीं और की विकृतियों में प्रेम का कोई स्थान नहीं है।

अब ये लालच इस सीमा तक बढ़ गया है कि पूरा देश इससे नष्ट हो रहा है। इस प्रकार हम कभी उन्नत नहीं हो सकते। इस दोष के रहते हम कोई भी उपलब्धि नहीं पा सकते। आप यदि अपने देश को प्रेम करते हैं, देश प्रेम यदि आपके हृदय में है तो कभी भी आप लालच नहीं करेंगे। परन्तु उस प्रेम का अभाव है। वे प्रेम करते हैं–मेरी समझ में नहीं आता कि वो किसे प्रेम करते हैं! अपने बच्चों से वे इस प्रकार प्रेम करते हैं कि उस प्रेम से बच्चों का जीवन ही नष्ट कर देते हैं!

प्रेम की कोई सीमा नहीं होती। प्रेम तो असीम होना चाहिए। इतना असीम प्रेम कि पूरे विश्व को अपने पाश में बांध ले। यह शक्ति है, यह कार्यरत है। आपको तो केवल इसका माध्यम बनना होगा, ऐसे व्यक्ति जो इस प्रेम का संचार कर सकें। प्रेम के इस खज़ाने पर आपका पूर्ण अधिकार है। इसे आप सर्वत्र फैला सकते हैं। परन्तु मैं देखती हूँ कि यहाँ भी लोग धन की भाषा में सोचते हैं। धन प्रेम का दुश्मन है। मैं आपको विश्वास पूर्वक बताती हूँ कि यदि अब भी आपका रूझान धन की ओर है तो आप कभी सहजयोग में उन्नति नहीं कर सकते।

मैं मानती हूँ कि मैं निराश हूँ। मेरी समझ में नहीं आता कि किस प्रकार चीज़ों में रुचि लूं। इसमें रुचि लेने वाला क्या है? लोग मुझ पर हँसते हैं कि "आप को सीधी–सीधी सी चीज़ों का भी ज्ञान नहीं है, आप रुपये गिनना भी नहीं जानतीं? मैंने कहा, "मैं जानती हूँ।" मैं आपको वैसे ही बता सकती हूँ कि कितना पैसा है, पर इसमें मेरी कोई रुचि नहीं है। दिलचस्पी लेने के लिए बहुत सी अन्य चीज़ें हैं। आप बच्चों को देखें, अच्छे–अच्छे लोगों को देखें। विश्व में बहुत से अच्छे लोग हैं, सुन्दर लोग हैं, सुन्दर चीज़ें हैं। बेकार की चीज़ों पर क्यों चित्त बर्बाद करना है? ये तो आती जाती रहती हैं। परन्तु आकर्षकतम चीज़ भी तो यहाँ विद्यमान है।

मेरे विचार से भारत में स्थिति सबसे खराब है। लोग कहते हैं भारत सबसे भ्रष्ट देश है, परन्तु मैं नहीं जानती। मैंने कभी

ऐसा कुछ नहीं देखा। व्यक्ति को सच्चा होना चाहिए। आज जैसे अवसर पर यह सोचना अत्यन्त शुभकर है कि आपके लिए धन का कोई मूल्य नहीं है। यह मूल्यहीन है। और आपको आश्चर्य होगा कि आपको धन की कभी कमी न होगी। कभी नहीं। सहजयोग में आपने यह स्थिति प्राप्त करनी है कि धन का कोई मूल्य नहीं। धन में कोई रुचि नहीं। आपका वैभव तो इस बात में है कि आप कितने लोगों को सहजयोग में लाए, कितने लोगों को सहजयोग का आनन्द प्रदान किया। आपने इसे खरीदा नहीं था। किसी ने भी सहजयोग को खरीदना नहीं है। यह तो सर्वत्र निःशुल्क प्रसारित है। ये आनन्ददायी है। धन से इसके अतिरिक्त आप क्या पाने की आशा करते हैं? कुछ नहीं। धन से तो केवल सिर दर्द, भय और सभी प्रकार की समस्याएं आती हैं।

अतः हमारे सहजयोग के समानान्तर स्वतन्त्र जीवन, पूर्ण स्वतन्त्रता एवं आनन्द होना चाहिए। किसी चीज़ की चिन्ता न हो। धन पर कुछ भी निर्भर नहीं। मैंने अत्यन्त निर्धन अवस्था में रहने वाले लोगों को भी अत्यन्त प्रसन्न एवं आनन्दित देखा है। और जिन लोगों के पास बेशुमार दौलत है, विशेषतः विदेशों में, उन्हें उदासी और खिन्नता से पीड़ित पाया है। वहाँ बड़ी अजीब स्थिति है। वहाँ लोग आत्महत्या कर लेते हैं। क्यों? यदि धन ही सब कुछ होता तो इन वैभवशाली देशों के लोग आत्महत्या क्यों करते? उनका क्या लाभ है? देखें, हर समय वे क्या सोचते हैं–किस प्रकार यह फैशन किया जाए? फैशन, क्योंकि आपके पास यदि धन नहीं है तो आप वो फैशन नहीं कर सकते। आजकल फैशन इतनी आम बात हो गए हैं कि सभी लोग फैशन के पीछे भटक रहे हैं। फैशन तक यदि वे नहीं पहुँच पाते तो वो सोचते हैं कि उनमें कोई कमी है। परन्तु आप लोगों पर यह बात लागू नहीं होती क्योंकि आप सहजयोगी हैं।

आप यह सब घटित होते देखते हैं, अब आपने क्या करना है? ऐसे लोगों पर दया करें। उनका तिरस्कार न करें, उन पर दया करें। उन्हें बतायें कि "तुम क्या कर रहे हो? क्यों अपना समय बर्बाद कर रहे हो? आत्मसाक्षात्कार रूपी जीवन के महानतम लक्ष्य को पाने का, आपके लिए यह सर्वोत्तम समय है। क्यों आप व्यर्थ की चीज़ों के पीछे दौड़ रहे हैं? यह चूहा दौड़ दौड़ने के लिए आपको कौन विवश करता है?"

मेरे विचार से सर्वत्र यह पराकाष्ठा है और लोग इसके विषय में सोच रहे हैं। परन्तु आप ही वह लोग हैं जो समाधान दे सकते हैं। आप इसे बहुत ही विस्तृत स्तर पर कार्यन्वित कर सकते हैं।

कहने से मेरा अभिप्राय ये है कि मैंने ऐसे लोग देखे हैं जिनके पास कुछ नहीं। वे आध्यात्मिक भी नहीं हैं। वे आत्मसाक्षात्कार भी नहीं दे सकते, कुछ भी नहीं दे सकते।

परन्तु क्योंकि वे सामाजिक कार्य कर रहे हैं, इसलिए वे प्रसिद्ध हैं। सामाजिक कार्य क्या है? गरीबों आदि की देखभाल करना या ऐसा ही कोई और कार्य। जब आपका प्रेम, जो कि इतना महान है, प्रभावशाली है, कार्य करने लगता है तो आप में यह भाव आता है कि आप कुछ करें। ऐसी स्थिति जब आएगी तो, आप हैरान होंगे, किस प्रकार लोग सहजयोग को समझते हैं!

अभी तक सहजयोग ठीक है, लोग बहुत अच्छे हैं, बढ़िया हैं, सन्त–सुलभ हैं, सभी कुछ है। परन्तु इसका प्रभाव दिखाई पड़ना चाहिए, आपके प्रेम का प्रभाव लोगों को दिखाई देना चाहिए। सर्वप्रथम 'क्षमा' है। आपको क्षमा करना है। लोग अत्यन्त मूर्ख हैं। अभी मैंने आपको बताया है कि लोग कितने मूर्ख हैं! अतः किसी चीज़ की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। आप यदि विवेकशील व्यक्ति हैं तो विवेक पूर्वक हर चीज़ को परखें तथा **फैशन आदि के शिकंजे में न फंसे। समूह बिल्कुल न बनाएं। इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। हम सहजयोगी हैं। हम आत्म-निर्भर हैं। हमें किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं।** आप यदि एक हैं तो हम सब ठीक हैं। आप यदि बहुत से हैं तो भी हम ठीक हैं।

अब आप लोग जान लें कि आपने एक अत्यन्त उच्चावस्था पा ली है। आपने परमात्मा के उस प्रेम को, उस अनन्त प्रेम को छू लिया है।

अतः अपनी दिन–चर्या में उस प्रेम की और अधिक अभिव्यक्ति करें, अन्य लोगों से कार–व्यवहार करते हुए उस प्रेम की अभिव्यक्ति करें। इस प्रकार से अपना प्रेम अभिव्यक्त करें कि अन्य लोगों को इससे खुशी मिले। इसके विषय में विचार किया जाना चाहिए। आप यदि सच्चे सहजयोगी हैं तो किस प्रकार परस्पर झगड़ सकते हैं? यदि वो सहजयोगी हैं तो किस प्रकार आप उनका अपमान कर सकते हैं? आप यदि सहजयोगी हैं तो कैसे आप धोखा दे सकते हैं? यह सम्भव नहीं है। इन चीज़ों में आपकी रुचि नहीं होनी चाहिए। ऐसा होने का अर्थ ये होगा कि आपका समाधान हो गया है, आप स्वच्छ हो गए हैं और अब आप निर्मल हैं। कोई आपको छू नहीं सकता।

इस प्रकार का दृष्टिकोण होना चाहिए। अपने प्रति आपमें सम्मान भाव होना चाहिए। आपकी भूमिका क्या है? आपका पद क्या है? आप को ज्ञान होना चाहिए कि आप आत्मसाक्षात्कारी हैं और आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति के रूप में अपने कर्त्तव्यों का ज्ञान आपको होना चाहिए। अन्य पागलों की तरह आप चूहा–दौड़ नहीं दौड़ रहे और न ही किसी प्रकार की प्रतियोगिता में भाग ले रहे हैं। आप प्रतिस्पर्धा में भाग नहीं ले रहे। आप तो बस अपने प्रेम तथा आशीर्वाद से उन्नत हो रहे हैं। मैं जानती हूँ कि किस प्रकार आशीर्वाद कार्य करता है। परन्तु सर्वप्रथम आपको इस आशीर्वाद के योग्य बनना होगा अन्यथा कोई सहायता नहीं कर सकता। केवल आपका प्रेममय स्वभाव

सहायक हो सकता है। इसी लिए ईसा मसीह ने कहा था कि परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश करने के लिए आपको बाल–सुलभ होना पड़ेगा। बच्चे कितने अबोध, कितने सहज होते हैं! छोटी–छोटी चीज़ों से वो रीझ जाते हैं। उन्हें किसी विशेष चीज़ की आवश्यकता नहीं होती। कितनी आश्चर्य की बात है कि किस प्रकार हमारा प्रेम, जो कि दिव्य–प्रेम से ज्योतित है, पूरे विश्व को परिवर्तित कर सकता है! किस प्रकार मुझे यह विचार आया और किस प्रकार ये समृद्ध हुआ? इस कार्य में यदि आप सब मेरी सहायता करें तो, मुझे पूर्ण विश्वास है, सहजयोग बहुत से ऐसे कार्य कर सकता है जो हम अभी तक नहीं कर पाये।

अब घर पहुँच कर आप सोचें कि मैंने क्या कहा है। इसके विषय में सोचें। आपको अन्तर्अवलोकन की आश्यकता है, सूझ–बूझ की आवश्यकता है। "सहजयोगी के रूप में मैंने अपने जीवन में क्या किया?" तब आप जान पाएंगे कि आप बहुत कुछ कर सकते हैं–बहुत कुछ। यही सब कार्य होते हैं।

परमात्मा आपको धन्य करें।

परम् पूज्य श्रीमाताजी की दुल्हनों को सीख

गणेश पूजा

(कबैला, इटली, 23.9.2001)

आज आप विवाह करने जा रही हैं। मैं आपको केवल इतना बताना चाहूँगी कि आपने यह कार्य अत्यन्त सूझ–बूझ के साथ करना है।

विवाहित महिला के रूप में सहजयोग में अपनी भूमिका को समझ लेना अत्यन्त आवश्यक है। कुछ अजीबोगरीब महिलाएं हमारे यहाँ आईं जिन्होंने विवाह केवल इसलिए किया क्योंकि वे विवाह करना चाहती थीं और अन्ततः उनके विवाह सफल न हो सके। ऐसी महिलाएं मेरे लिए इतनी कष्टकर हैं कि मेरी समझ में नहीं आता कि विवाह करने से पूर्व वे इस बात को समझ क्यों नहीं लेतीं कि उन्हें क्या करना होगा।

सहजयोग में आपको सफल विवाह करने चाहिएं। ये कोई सर्वसाधारण विवाह नहीं है। सहज विवाह किसी भी तरह से बलिदान नहीं है यह तो आनन्द से परिपूर्ण सूझ–बूझ है। आपको बहुत से कष्ट भी झेलने पड़ सकते हैं, हो सकता है कि किसी की स्थिति पैसे के मामले में अच्छी न हो। ये भी हो सकता है कि किसी पुरूष के पास ठीक–ठाक पैसा हो फिर भी इस मामले में आपका ध्यान न रख रहा हो, आपको पैसा न देता हो या बहुत ही रोबीला हो। ये सब सम्भव है सभी कुछ सम्भव है क्योंकि आप भी तो ऐसी हो सकती हैं। सहजयोग में विवाह के लिए हमने आपको चुना है और हमें आशा है कि आप इस विवाह को बहुत ही सफल तथा आनन्ददायी बनाएंगी।

महिलाओं की ज़िम्मेदारी बहुत अधिक है। महिला ने ही विवाह को सफल बनाना है। किसी व्यक्ति विशेष से यदि आप विवाह नहीं करना चाहतीं तो आप इसके लिए इन्कार कर सकती हैं। परन्तु अब जब आप विवाह कर रही हैं तो कृपा करके सहजयोगिनी दुल्हन के नज़रिए से सोचिए। सहजयोग का नाम ऊँचा करना आपकी ज़िम्मेदारी है। सामाजिक घटना के रूप में हम आपका विवाह नहीं कर रहे। हम आपका विवाह इसलिए कर रहे हैं कि आप सहजयोगिनी हैं, विवेकशील महिला हैं और आप सहजयोग को गौरव प्रदान करेंगी।

मैं यहाँ बताना चाहूँगी कि अब तक 99% विवाह सफल हुए हैं–99%। अब आपका ये नया समूह विवाह के लिए आया है और देखना है कि यह किस प्रकार कार्यान्वित होता है।

आपके मस्तिष्क में यदि कोई धारणाएं हैं, कोई विशेष छवि यदि आपने अपने मस्तिष्क में बनाई हुए है तो उसे निकाल

दें। हमने वास्तविकता के अनुरूप चलना है और देखना है कि वास्तविकता काल्पनिक विचार नहीं होती। इस बात से न तो आपको झटका लगना चाहिए और न ही पुरुष को। परन्तु मान लो कि उसे झटका लगता भी है तो भी आपमें सूझ–बूझ होनी चाहिए। आप में सूझ–बूझ की भावना होनी चाहिए। पुरुषों से आपको इसकी आशा नहीं करनी चाहिए।

जहाँ तक धनार्जन का सम्बन्ध है यह पुरुषों की ज़िम्मेदारी है। उनकी अन्य ज़िम्मेदारियाँ है परन्तु सूझ–बूझ महिलाओं की ज़िम्मेदारी है। उन्हें अपने पति को, पारिवारिक जीवन को तथा उससे जुड़ी सभी चीज़ों को समझना होगा। महिलाओं में सूझ–बूझ की भावना ही अच्छे परिवारों का सृजन करती है। सुखद पारिवारिक सम्बन्धों के लिए महिला ही सभी कुछ करती है। वे पति को समझाती हैं और अपनी सूझ–बूझ से उसकी सहायता करती हैं। एक बार जब पतियों के मन में यह बात बैठ जाएगी कि आप विवेकशील हैं, सहजयोग की चिंता करती हैं, आप गरिमामय हैं तो आपकी सभी समस्याओं का समाधान हो जाएगा। अपनी ज़िम्मेदारियों की गहन सूझ–बूझ का होना अत्यन्त आवश्यक है। मुझे विश्वास है कि आप सब इस कार्य में सफल होंगे क्योंकि आप सहजयोगिनियाँ हैं। कभी रौब न जमाएं। इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। आप यदि विवेकशील हैं तो आप गलतियों और गलत फहमियों के विषय में अपने पति से बता सकती हैं परन्तु इसके लिए आप में विशेष आकर्षण और विशेष सूझ–बूझ का होना आवश्यक है।

मैं आपको अपने जीवन का एक उदाहरण दूंगी।

वैसे तो बहुत से उदाहरण हैं परन्तु मैं आपके सम्मुख एक उदाहरण दूंगी। मेरे पति के दफ्तर से एक व्यक्ति मुझे मिलने आया। उसने बताया कि मैंने एक बहुत बड़ी गलती की थी कि आपके पति की संस्था को छोड़कर मैंने कहीं और नौकरी कर ली थी। परन्तु लगता है कि वहाँ पर मैं कभी प्रसन्न नहीं रह सकता, इसलिए मैं वापिस आना चाहता हूँ। मेरे पति ने उससे कहा था, "तुम्हारे लिए यहाँ कोई स्थान नहीं है, ये अनुशासनहीनता है जो अच्छी नहीं है। आपने ऐसा क्यों किया? आपने दूसरी संस्था की नौकरी क्यों स्वीकार की?" उसने उत्तर दिया, "श्रीमान, अब मैं वापिस आना चाहता हूँ। इसके लिए मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ। प्रतिदिन वह इसके लिए प्रार्थना करता। परन्तु पुरुषों के मस्तिष्क में यदि एक बार कुछ घुस जाए तो वे इसे जल्दी से बदलते नहीं। अतः वो मेरे पास आया और मुझे बताया कि मैं इसी संस्था मैं वापिस आना चाहता हूँ।" अपने पति को मैं भली–भांति जानती हूँ, इसलिए मैंने कहा, "ठीक है, देखते हैं क्या हो सकता है," मेरे पति जब वापिस आए तो मैंने उनसे कहा, "क्यों नहीं आप उस व्यक्ति

को पुनः नौकरी में ले लेते?" "ओह, तो अब वो तुम्हारे पास भी आया था! वो बहुत समझदार है और जानता है कि उसे कहाँ जाना चाहिए।" मैंने कहा, "नहीं, हो सकता है वो सोचता हो कि मैं आपसे कहीं अधिक उदार हूँ।" ये बहुत बड़ी चुनौती थी। "इसलिए वह मेरे पास आया था। आपको भी उदार होना चाहिए।" तब उन्होंने उस व्यक्ति को वापिस ले लिया। मैं ये कहना चाहूँगी कि इसके बाद पूरा जीवन उसने मेरे पति की जी–जान से सहायता की।

तो ऐसा ही है। हर कार्य को करने का एक तरीका है, उसे आपने सीखना है, उसमें कुशलता प्राप्त करनी है। इसके माध्यम से बिना किसी को चोट पहुँचाए, बिना किसी से कटु बोले, बिना किसी से अभद्र हुए, आप सभी अच्छे कार्य कर सकेंगे। ये सब प्रबन्धन है। यह विशेष चीज़ आपको सीखनी होगी तभी सारे झगड़े समाप्त हो पाएंगे। ठीक है?

परमात्मा आपको धन्य करें। मैं आप सबको हृदय से आशीष देती हूँ।

परम् पूज्य श्रीमाताजी की दुल्हों को सीख

गणेश पूजा

(कबैला, इटली, 23.9.2001)

मैं दुल्हनों से बात–चीत करके आई हूँ। उन्हें बताया है कि उनके कर्तव्य क्या हैं तथा उसका अर्थ क्या है? मैंने उन्हें विशेष रूप से बताया है कि पुरुष प्रायः थोड़े से उत्तेजित होते हैं। विवाह से भी वे उत्तेजित हो जाते हैं। अतः आप लोगों को चाहिए कि और अधिक विवेकशील बनें और मुझे विश्वास है–वो लड़कियाँ बहुत ही विवेकशील दिखाई दे रहीं थीं। फिर भी आपको ये बात ध्यान में रखनी है कि आप सहजयोग में विवाह कर रहे हैं, विवाह नहीं, सहजयोग –विवाह कर रहे हैं। ये बात बहुत महत्वपूर्ण है। अपने विवाह को आपने अत्यन्त सफल बनाकर दिखाना है।

घर–गृहस्थी और बच्चों की ज़िम्मेदारी, निःसन्देह–मैं इस बात से सहमत हूँ– लड़कियों की या दुल्हनों की होती है। परन्तु आपकी भी ज़िम्मेदारी है कि उसका ध्यान रखें, उसकी उपेक्षा न करें। ये कहकर कि मैं बहुत व्यस्त हूँ , इसे तर्कसंगत न ठहराएं। अपनी पत्नी को कुछ समय आपको देना ही होगा। इस मामले में आपको लापरवाही नहीं करनी चाहिए। ये पहली चीज़ है। उदाहरण के रूप में जब आप काम से घर वापिस आते हैं तो–मैं जानती हूँ, आप थके हुए होते हैं, परन्तु देखें कि वह क्या कर रही है। उससे पूछें? यदि वह ज्यादा व्यस्त है तो उसकी सहायता करने का प्रयत्न करें। में सोचती हूँ कि अपने प्रेम की अभिव्यक्ति करना पुरुषों के लिए बहुत आवश्यक है अन्यथा आप तो बस मान लेंगे कि मैं विवाहित हूँ। ये बात नहीं है। अतः घर लौटकर अपनी पत्नी से अच्छी तरह बातचीत करें, उससे पूछें कि वह क्या कर रही थी और क्या उसे किसी चीज़ की आवश्यकता है।

सहजयोग में हमारी एक परम्परा या ये कहें नियम है कि अपनी कमाई का सारा पैसा पत्नी के पास रखा जाना चाहिए। उससे पूछे बिना आपको कोई पैसा नहीं खर्चना चाहिए और आपसे पूछे बिना उसे भी पैसा नहीं खर्चना चाहिए। पैसा बहुत बड़ी समस्या है। आपको यदि पैसा चाहिए तो आपको पूरा अधिकार है। यह पति–पत्नी दोनों की सम्पति है परन्तु पत्नी को इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि पैसा कितना है। न वो आपसे पूछे बिना खर्च कर सकती है न आप उससे पूछे बिना।

यह आपसी सूझ–बूझ है। प्रेम की आपको पूरी समझ होनी चाहिए कि किस प्रकार के प्रेम की अभिव्यक्ति आप कर रहें हैं। आप यदि उस पर संदेह करते हैं तो गलत है

या यदि आप ये सोचते हैं कि 'ये सब तो मेरा है' आप यदि समझते हैं कि यह सब तो मेरा है वह पूछने वाली कौन है तो यह गलत है। महिलाओं का नौकरी आदि करना मुझे पसन्द नहीं फिर भी यदि आवश्यक होगा तो वे कार्य करेंगी। कार्यरत होने की स्थिति में मैंने उनसे बताया है कि उन्हें इस बात के प्रति सावधान रहना कि सर्वप्रथम वे गृहणियाँ हैं। हम केवल विवाह ही नहीं करना चाहते, हम सहजयोगियों के विवाह करना चाहते हैं जिनके सुन्दर बच्चे हों और सुन्दर परिवार बनें। हम खूबसूरत परिवार चाहते हैं।

अतः पतियों का हावी होना या पत्नियों का दोनों ही गलत धारणाएं हैं। एक दूसरे से यदि आप प्रेम कर सकें तो यह बहुत हितकर होगा। मैं देखती हूँ कि छोटी–छोटी चीज़ों के लिए लोग परस्पर लड़ते हैं। कपड़ों के लिए, खाने के लिए और छोटी–छोटी चीज़ों के लिए लोग परस्पर लड़ते हैं! आप यदि किसी से प्रेम करें तो आपका जीवन अत्यन्त सुन्दर बन जाता है। यह छोटी–छोटी चीजें व्यर्थ हैं। अतः अपनी पत्नियों को परखें नहीं, उन पर हावी न हों। उन्हें यदि आपके पथ–प्रदर्शन की जरूरत है तो ठीक है। परन्तु यदि पति हर समय यह कहता रहे ऐसा करो, वैसा करो तो वह बड़ा उबाऊ हो जाता है। हमेशा ध्यान रखें कि आप अपने और अपनी पत्नी के जीवन को उबाऊ न बना दें। जीवन के आनन्द लेने के बहुत से तरीके हैं। एक दूसरे के साथ बैठकर भी आप जीवन आनन्दमय बना सकते हैं। परस्पर बातचीत करके भी आप जीवन का आनन्द ले सकतें हैं। परन्तु आपको यदि यह कला नहीं आती तो सम्भव है कि आपको भी समस्या हो, आपकी पत्नी को भी समस्या हो।

पत्नी में यदि कोई गम्भीर समस्या है केवल तभी आप विवाह को तोड़ सकते हैं। हम इस समस्या को देखने का प्रयत्न करेंगे। परन्तु सामान्य स्थिति में आप ये समझने का प्रयत्न करें कि पत्नी यदि घर का कार्य सम्भाल रही है तो वह समान रूप से महत्वपूर्ण है, आपसे भी अधिक महत्वपूर्ण है। आपका दृष्टिकोण यदि ये हो कि दो आत्माओं के बीच–बाएं और दाएं के बीच विवाह हुआ है। एक दूसरे के प्रति पूर्ण सूझ–बूझ आ जाएगी। विवाह का भावनात्मक पक्ष भी है परन्तु मैं देखती हूँ प्रायः विवाहित लोगों में भावनात्मक पक्ष की समझ नहीं होती। पत्नी यदि उदास है या रो रही तो आपके प्रेम के दो शब्द, या उसके प्रति प्रेम प्रदर्शन बहुत बड़ा कार्य करेंगे। किसी को प्रेम करने से अच्छा और कुछ नहीं हो सकता।

विवाह के सर्वसाधारण अनुभव के लिए आपका विवाह नहीं हुआ है। आपका विवाह प्रेम का आनन्द लेने के लिए हुआ है। प्रेम करना बहुत बड़ा आशीर्वाद है और दिव्य है। आप यदि प्रेम करते हैं तो आप दोष नहीं खोजेंगे। अपने विवाहित जीवन के

आनन्द लेने के उपाय आप खोजेंगे। मैंने आपको यहाँ ये बताने के लिए बुलाया है कि आपने अपने विवाहित जीवन का आनन्द लेना है और अकेले आप आनन्द नहीं ले सकते। अकेले आप आनन्द नहीं ले सकते। अतः आपकी पत्नी आपकी साथी है, आपकी मित्र है, आपकी सभी कुछ है। इसके विषय में सुन्दर विचार बनाएं। कहने से मेरा अभिप्राय है कि कुछ लोग तो बहुत अधिक रोमांटिक होते हैं और कुछ बिल्कुल नहीं होते। अतः किसी भी चीज़ की अति नहीं होनी चाहिए। सहजयोगी के रूप में आप अपनी पत्नी के गुणों की प्रशसा करें और सहजयोग के विवाह को समझें।

निःसन्देह सर्वोत्तम बात तो ये है कि परस्पर विश्वास करें। विवाहित लोग परस्पर सन्देह करने लगते हैं और फिर अलग हो जाते हैं। अतः सन्देह करने की कोई बात नहीं। विवाहित जीवन से डरने की कोई बात नहीं। विवाह तो एक अत्यन्त सुन्दर जीवन में आपका प्रवेश है। मैं कहूँगी कि आपका अपने जीवन को किसी अन्य के साथ बाँटना सुन्दर उत्क्रान्ति है। परन्तु बहुत से लोग इसमें असफल हो जाते हैं, क्यों? क्योंकि वो सोचते हैं वो पुरुष हैं और पत्नियाँ महिलाएं। दोनों परस्पर मिलकर अत्यन्त प्रसन्नता पूर्वक रह सकते हैं।

मैंने देखा है कि कुछ पति बहुत अच्छे हैं वे इतना कठोर परिश्रम करते हैं कि उनके पास पत्नियों के लिए समय ही नहीं होता। परन्तु फोन करके वे उनकी सुध लेते हैं। पता लगाते हैं कि वह ठीक तो है।

मैं आपको लाल बहादुर शास्त्री का उदाहरण देना चाहूँगी। वो अपनी पत्नी से बहुत प्रेम करते थे। उनकी पत्नी सर्वसाधारण महिला थीं, पढ़ी–लिखी भी न थीं और एक सामान्य परिवार से सम्बन्धित थीं। एक बार मैं उनके घर पर गई। प्रातः दस बजे मैं उनके घर पर थी तो लाल बहादुर शास्त्री ने अपने दफ्तर से पत्नी को एक पत्र भेजा जिसमें लिखा था रोज़मर्रा की तरह से मैंने स्नान आदि किया परन्तु तुम तब तक सो रही थीं। मैंने तुम्हें परेशान नहीं करना चाहा। क्योंकि तुम कल रात सोई नहीं थी इसलिए मैंने तुम्हें जगाना नहीं चाहा। मुझे खेद है। परन्तु मैंने अभी तक चाय नहीं पी है। क्या मैं तुम्हारे साथ चाय पीने आ सकता हूँ? वे परस्पर इतने समीप थे! देखिए ये कितना हृदयस्पर्शी है! वे आए। मैं उन्हें देखकर आश्चर्यचकित थी। वे भारत के प्रधानमंत्री थे फिर भी देखिए किस प्रकार वे अपनी पत्नी का ध्यान रखते थे! वे घर पर आए और अपनी पत्नी के साथ चाय पी। मैं घर में छिपी रही, उनके सामने नहीं आई। मैंने सोचा कि मुझे बाधा नहीं बनना चाहिए।

ये सभी छोटी–छोटी चीज़ें जीवन में बहुत हितकर होती हैं। यद्यपि शास्त्री जी अत्यन्त व्यस्त व्यक्ति थे फिर भी वे अपनी पत्नी तथा परिवार का सदैव ध्यान रखते थे। मैं जब वहाँ थी तो मुझे हैरानी हुई जब उन्होंने अपनी बेटियों से कहा कि "तुम

अपने बच्चों की देखभाल स्वयं करो, मेरी पत्नी तुम्हारी नौकरानी नहीं बनी रहेगी। मैं उसे आया नहीं बना सकता। तुम स्वयं इस बात का ध्यान रखो।" तो बच्चों के मुकाबले पत्नी को क्या स्थान दिया गया! ऐसा ही होना चाहिए। इसी प्रकार से हम अन्य व्यक्ति के साथ रहना सीखते हैं। हर समय यदि आप अपने ही बारे में सोचते रहें, "मुझे कौन से आराम मिल रहे हैं, ये खाना अच्छा न था" तो आप सहजयोगियों की तरह से जीवन नहीं व्यतीत कर रहे। सहजयोगी अन्य लोगों के लिए जीवित रहता है, केवल अपने लिए नहीं और इस चीज़ का आरम्भ उसकी पत्नी से होता है। आपकी यदि कोई समस्या है तो, निःसन्देह, उसका समाधान किया जा सकता है। आप मुझे पत्र लिख सकते हैं और हम इन समस्याओं को देखेंगे। परन्तु आवश्यक बात ये है कि आपमें भावनात्मक सन्तुलन होना चाहिए। उसकी समझ आपको होनी चाहिए। पत्नी यदि खिन्न है तो आप उससे पूछें क्यों, क्या बात है?" हमेशा उसका साथ दें–हमेशा। चाहे आपकी माँ–पिता या किसी अन्य का मामला ही क्यों न हो आप उसका साथ दें और फिर उसे बताएं उचित क्या है। परन्तु यदि आप उसका विरोध करने लगेंगे तो उसे समझ नहीं आएगा। उसका साथ देकर यदि आप सबको कहेंगे कि "हम चीज़ों को देखते हैं" और इस प्रकार से यदि आप उसका आत्म सम्मान स्थापित करेंगे तो अच्छा होगा। उसे विश्वस्त होने दें कि कोई उसे अपमानित नहीं करेगा। कोई यदि आपकी पत्नी को अपमानित करे तो उस समय आपको अपनी पत्नी का साथ देना चाहिए। बाद में आप उस मामले को सुलझा सकते हैं। किसी में साहस नहीं होना चाहिए कि आपकी पत्नी को कोई कुछ कहे। हर समय अपनी पत्नी का साथ दें क्योंकि वह एक सहजयोगिनी है। बाद में आप उससे बात करके पूछ सकते हैं कि क्या बात है। एकान्त में ले जाकर आप उससे पूछें, "क्या बात है, क्या हुआ?"

परन्तु अन्य लोगों के सामने आपको उस पर चिल्लाना नहीं चाहिए और न ही उसकी गलतियों को सुधारना चाहिए। इतना ही नहीं किसी भी पति को अपनी पत्नी पर चिल्लाना नहीं चाहिए। ये बात मेरी समझ में नहीं आती कि पति अपनी पत्नियों पर चिल्लाए क्यों! इससे उनकी गलत परवरिश का पता चलता है। हम सभी सहजयोगी हैं मैंने आपकी परवरिश की है। मैं आपकी माँ हूँ। कृपा करके कभी अपनी पत्नियों पर चिल्लाएं नहीं। कभी अपना क्रोध उन्हें न दिखाएं। मेरा कहने का अभिप्राय है इन सब छोटी–छोटी बातों का समाधान प्रेम प्रदर्शन के द्वारा ही किया जा सकता है। जैसे आप मुझे प्रेम करते हैं वैसे ही मैं आपको प्रेम करती हूँ। आपमें यदि कोई कमी होगी तो मैं आप पर चिल्लाऊंगी नहीं, कभी नहीं। मैं क्या करूंगी, मैं इसे बड़े प्रेम से लूंगी।" आप में प्रेम एवं करुणा की अत्यन्त महान शक्ति है। अपनी पत्नी

से यदि आप प्रेम नहीं कर सकते तो किससे करेंगे। अपने बच्चों से या किसी अन्य से कहीं अधिक प्रेम अपनी पत्नी को करें। अपना थोड़ा सा प्रेम बाँटकर देखें आप आश्चर्य चकित रह जाएंगे!

मैंने देखा है कि छोटी–छोटी चीज़ों के लिए भी सहजयोगी अपनी पत्नी से नाराज़ हो जाते हैं। उदाहरण के लिए मान लें मैं आपकी माँ हूँ सभी कुछ हूँ। परन्तु आपकी पत्नी कभी पूजा में कोई गलती करती है, किसी बात को समझने का प्रयत्न नहीं करती तो मैं बुरा नहीं मानती। बाद में उसे बताएं कि ये गलती थी और तुम्हें नहीं करनी चाहिए थी। वे हमारी माँ हैं, तब वे आपका सम्मान करेंगी। परन्तु आप यदि चिल्लाएंगे तो आप दोनों में दूरी पैदा हो जाएगी परन्तु आप यदि इस प्रकार प्रेम से उनसे बात करेंगे तो आपका पूरा जीवन परिवर्तित हो जाएगा। उन्हें प्रेम करें, उनसे भद्रता पूर्वक व्यवहार करें। ऐसा करना बहुत आवश्यक है। पश्चिम में मैंने विशेष रूप से ये बात देखी है कि लोगों को अपनी पत्नियों से व्यवहार करने का प्रशिक्षण ही नहीं है। इस प्रकार का कोई प्रबन्ध ही वहाँ नहीं है। परन्तु भारत में यह सब कुछ है। भारत में पति–पत्नी, जब पहली बार मिलते हैं तो बहुत बड़ा उत्सव होता है और सभी कुछ अत्यन्त मधुरता पूर्वक होता है।

अतः यद्यपि सम्बन्ध तो हैं परन्तु आपने उन सम्बन्धों को स्थापित करना है। अत्यन्त मन्द–गति से शान्तिपूर्वक सहजरूप से जीवन में चलें। महिलाओं पर उछलें नहीं और न ही उन पर चिल्लाने लगें। वास्तव में ऐसा करना उचित न होगा। इतने वर्षों में हमारे सम्मुख इस प्रकार के केवल तीन–चार मामले आए। इससे अधिक नहीं। फिर भी अपनी पत्नी का संचालन बड़े प्रेम से करें उससे बड़े प्रेम पूर्वक बात करें। पत्नी से इस प्रकार बात करें कि उसे महसूस हो कि आप उसके पति हैं वो आपकी पत्नी है। ये एक कला है। आप क्योंकि सहजयोगी हैं आपको विश्व के सम्मुख ये दर्शाना होगा कि सहजयोग के कारण आपके विवाह सफल हुए हैं। अपनी माँ या किसी अन्य के चलाए न चलें। सबसे पहले अपनी पत्नी को सुने, देखें कि उसकी क्या समस्या है अन्यथा ये विवाह टूट जाएगा। जब आपका विवाह हो चुका है तो किसी अन्य महिला में आपको बिल्कुल भी दिलचस्पी नहीं लेनी चाहिए। आपकी पत्नी सबसे पहले है। वह अन्य महिलाओं में आपकी दिलचस्पी को समाप्त करती है। इसकी कोई आवश्यकता नहीं, आपकी अपनी पत्नी है, अन्य महिलाओं में क्यों आपको दिलचस्पी लेनी चाहिए?

ये सब करने के बावजूद भी यदि आपकी पत्नी कष्टकर है तो मुझे बताएं। ये बात देखने के लिए मैं यहाँ बैठी हुई हूँ। परन्तु आप निराश न हों। चीज़ें सुधरेंगी, हम उन्हें ठीक कर सकते हैं। परन्तु आप यदि विवेकशील नहीं हैं तो समस्याएं खड़ी हो

जाएंगी।

मेरे विचार से भारतीयों के मुकाबले में आप लोगों के पति बेहतर हैं इसमें कोई शक नहीं (श्रीमाताजी साथ खड़े किसी व्यक्ति से पूछती हैं क्या यहाँ पर कोई इंग्लैण्ड के दुल्हे भी हैं?) इंग्लैण्ड में मैंने देखा है पुरुष अत्यन्त दब्बू हैं। कानून के कारण वे अत्यन्त विनम्र हैं वहाँ का कानून इतना अजीब है और यही कारण है कि वहाँ के लोग बहुत ही भावुक हैं। वे अत्यन्त दब्बू हैं, इतने दब्बू कि कानून के कारण वे अपनी पत्नियों को बिगाड़ देते हैं। परन्तु अब हम अन्तर्राष्ट्रीय विवाह करते हैं और इटली में वहाँ के कानून के अनुसार विवाह करें तो भी कुछ बुरा नहीं है। परन्तु आपको हमेशा याद रखना है कि जो भी कुछ आप कर रहे हैं वह दैवी नियम के अनुसार है। दैवी नियम का पालन होना चाहिए और इसी प्रकार से आप अपने विवाह को सफल बना सकते हैं। मैं यही सब देखने के लिए आतुर हूँ कि इन विवाहों से आप आनन्दित हो जाएं। यह अत्यन्त विशिष्ट चीज़ है जिससे आपको परमात्मा का आशीर्वाद प्राप्त होगा और आप अपने प्रेम का आनन्द लेंगे।

परमात्मा आपको धन्य करें।

पूर्ण समर्पण-एकमेव

काऊलेमैनोर गोष्ठी, 31.07.1982

(परम् पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन)

आज मैं आपको कुछ ऐसी बातें बताने वाली हूँ जो मुझे बहुत पहले बता देनी चाहिए थीं।

जैसे मैंने आपको बताया है, आपका मुझे पहचानना अत्यन्त आवश्यक है। उत्थान के लिए मुझे मान्यता देने की शर्त आवश्यक है, मैं इसे बदल नहीं सकती। ईसा–मसीह ने कहा था कि "मेरे विरुद्ध यदि कुछ कहा गया तो उसे सहन कर लिया जाएगा, क्षमा कर दिया जाएगा परन्तु आदिशक्ति (Holy Ghost) के विरुद्ध कही गई कोई भी बात बर्दाश्त नहीं की जाएगी (Anything against me will be tolerated, will be forgiven but anything against the Holy Ghost will not be.") ये बहुत बड़ी चेतावनी है। संभवतः लोग इसका अर्थ नहीं समझते। निःसन्देह आपमें से कोई भी मेरे विरुद्ध नहीं, ये बात सच है। आखिरकार आप सब मेरे बच्चे हैं, मैं आपको अथाह प्रेम करती हूँ और आप मुझे। यह चेतावनी तो ईसा–मसीह ने आपको दी है। परन्तु हमें समझना चाहिए कि हम उतनी तेजी से उन्नति क्यों नहीं कर रहे जितनी हमें करनी चाहिए।

लोगों को जब सम्मोहित कर लिया जाता है तो वे धाराशायी होकर अपने गुरुओं के सम्मुख लमलेट हो जाते हैं। पूर्णतः धाराशायी हो जाते हैं। सम्मोहित होकर लोग अपनी धन–दौलत, घर–बार, परिवार, बच्चे सभी कुछ त्यागकर अपने गुरुओं के सम्मुख धाराशायी हो जाते हैं–बिना कोई प्रश्न पूछे, बिना कोई विवरण पूछे, बिना अपने गुरु के जीवन के विषय में पूछताछ किए। ऐसे सभी लोग तेजी से अंधकार में, गहन अंधकार में, और पूर्ण विनाश की ओर चले जाते हैं। परन्तु आप सब लोग सहजयोगी हैं और आपने अपना निर्माण करना है।

अभी तक इतने स्पष्ट शब्दों में यह बात आपको बताकर मैं आपके अहं को ठेस नही पहुँचाना चाहती थी। संभवतः पहली बार मैं ये बात आपको कह रही हूँ–**"कि आपको मेरे प्रति पूर्णतः समर्पित होना होगा सहजयोग के प्रति नहीं मेरे प्रति।" सहजयोग तो मात्र मेरा एक पक्ष है सभी कुछ छोड़कर आपको समर्पित होना होगा।** पूर्ण समर्पण–अन्यथा आप आगे उन्नत न हो पाएंगे, बिना कोई प्रश्न किए, बिना कोई बहस किए।

पूर्ण समर्पण ही एकमेव मार्ग है जिसके द्वारा आप अपना उत्थान कर सकेंगे।

आज भी लोगों को पकड़ हो जाती है,

उन्हें समस्याएं हो जाती हैं! क्या कारण है? बहुत से लोग मुझसे पूछते हैं कि श्रीमाताजी एक बार आत्म–साक्षात्कार प्राप्त हो जाने के बाद भी क्यों हमारा पतन होता है?

इसका एकमात्र कारण यह है कि समर्पण अधूरा है। यदि पूर्ण श्रद्धा और पूर्ण समर्पण स्थापित नहीं हुआ, यदि आप अभी तक भी नहीं समझ पाए कि मैं परमेश्वरी हूँ, यदि आप अपेक्षित रूप से इस बात को नहीं समझ पाऐ तो पतन आवश्यक है। ये बात आप सब पर लागू नहीं होती। फिर भी आप यदि अपने हृदय में झाँके, अपने मस्तिष्क में देखें तो आप जान जाएंगे कि जो समर्पण भाव, जो श्रद्धा भाव आपके मन में ईसामसीह, श्री कृष्ण तथा अन्य अवतरणों के प्रति था वह मेरे प्रति नहीं है। श्रीकृष्ण ने कहा था: 'सर्वधर्माणाम् परितज्य, मामेकम् शरणम् ब्रज' अर्थात विश्व के सभी धर्मों को भूलकर मेरी शरण में आ जाओ। धर्म से उनका अभिप्राय हिन्दू, सिक्ख, ईसाई या मुसलिम धर्म नहीं था। उनका अभिप्राय आश्रय (Sustenance) से था। **"सभी अन्य आश्रय भूलकर पूर्णतः मेरे प्रति समर्पित हो जाओ।"** यह बात उन्होंने छः हजार वर्ष पूर्व कही थी। आज भी ऐसे बहुत से लोग हैं जो कहेंगे कि, हमने स्वयं को पूर्णतः श्रीकृष्ण के प्रति समर्पित कर दिया है। लेकिन आज वो हैं कहाँ? वो लोग भी, जिन्हें मैंने आत्म–साक्षात्कार दिया है, वो भी ऐसा कहते हैं। निःसन्देह उनमें और मुझमें कोई अन्तर नहीं, परन्तु आज तो केवल मैं हूँ, केवल मैं हूँ जिसने आपको आत्मसाक्षात्कार दिया है। परन्तु हमारी नौकरियाँ, हमारी व्यक्तिगत समस्याएं, हमारी पारिवारिक समस्याएं ही हमारी मुख्य प्राथमिकताएं हो सकती हैं और समर्पण को हम अन्तिम स्थान देते हैं।

मैं भ्रान्ति रूप (ILLUSIVE) हूँ–यह सत्य है–मेरा नाम महामाया है। निःसन्देह मैं भ्रान्तिरूप हूँ परन्तु मेरा ये भ्रान्तिरूप केवल आप लोगों को परखने के लिए है।

समर्पण उत्थान का महत्वपूर्ण अंग है। क्यों? क्योंकि जब भी आप भय की स्थिति में फँसे होते हैं, जब आपके अस्तित्व को खतरा होता है, ऐसे समय पर जबकि आज पूरा विश्व आधार विहीन स्थिति में हैं और पूर्ण विनाश की ओर बढ़ रहा है, **यह अत्यन्त आवश्यक हो गया है कि आप किसी ऐसे आधार को पकड़ लें जो आपकी रक्षा कर सके। पूरी शक्ति और श्रद्धा के साथ आपको इस अवलम्बन को पकड़े रहना होगा।**

आप यदि सर्वसाधारण जल में भीग रहे हों तो कोई बात नहीं परन्तु यदि आप समुद्र में गोते खा रहे हैं और क्षण–क्षण मृत्यु का भय हो और ऐसे समय एक हाथ आपकी रक्षा के लिए बढ़े तो आपके पास सोचने के लिए समय नहीं होता। एक दम से पूरी ताकत और श्रद्धा से उस हाथ को पकड लेना आपके लिए आवश्यक हो जाता है।

हममें जब बाधाएं होती हैं और जब हम

नकारात्मकता से घिरे होते हैं तो हमें इसका आभास हो जाता है और हम थोड़े से हड़बड़ा जाते हैं। यह ऐसा समय होता है जब हम अपने आधार को कसकर पकड़ना चाहते हैं परन्तु बाधाएं हममें ऐसे विचार पैदा कर देती है जो अत्यन्त हानिकारक होते हैं। इस प्रकार एक बहुत बड़े संघर्ष का आरम्भ हो जाता है। ऐसी स्थिति में सर्वोत्तम उपाय क्या हैं? अन्य सभी चीज़ों को भूल जाना ही सर्वोत्तम उपाय है। भूल जाएं कि आप भूतबाधित हैं या आपमें कोई बाधा है। अपनी पूरी शक्ति के साथ, जितनी भी शक्ति आपमें है, आपने मुझसे जुड़े रहना है।

परन्तु हमारी समर्पण शैली अत्यन्त फैशनेबल एवं आधुनिक है जिसमें सहजयोग का कोई खास महत्व नहीं होता और श्रीमाताजी तो बस प्रसंग मात्र के लिए होती हैं। मुझे खेद है यह सब नहीं चलेगा। ये सब चीज़ें मुझे आपको नहीं बतानी हैं क्योंकि आप यदि देवी–महात्म्य पढ़ लें तो काफी है। आप यदि देवी के सहस्र नाम पढ़ेंगे तो काफी है: कि उन्हें केवल भक्ति द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। केवल समर्पण द्वारा ही उन्हें पाया जा सकता है। उन्हें केवल अपने भक्त–अपने उपासक प्रिय हैं। ऐसा कहीं भी नहीं लिखा कि वे अच्छे वक्ताओं को, वाद–विवाद करने वालों को, अच्छे वस्त्र धारण करने वालों को, ठाट–बाट से रहने वालों को और अच्छी परिस्थितियों में रहने वालों को प्रेम करती हैं। वे केवल अपने उपासकों को प्रेम करती है। यह भक्ति, यह समर्पण उन्माद की तरह से न होकर सतत्, निरन्तर, अविरल प्रवाहित और सदैव बढ़ते हुए होने चाहिएं। अब आगे उन्नत होने का केवल यही मार्ग है।

परन्तु हमारे लिए हमारी छोटी–छोटी समस्याएं ही महत्वपूर्ण हैं। किसी को घर की समस्या है, किसी को महाविद्यालय में प्रवेश की समस्या है और किसी ने कुछ और काम करना है। ये सारी चीज़ें श्री कृष्ण वर्णित धर्म हैं। श्रीकृष्ण ने कहा था, 'सर्वधर्माणाम् परित्यज्य मामेकम् शरणम व्रज' सभी धर्मों को त्याग दो, इन सभी तथाकथित धर्मों को जैसे पत्नी–धर्म (पत्नी के कर्तव्य), पति–धर्म (पति के कर्तव्य) पुत्र धर्म, पिता धर्म, नागरिक धर्म और विश्व नागरिक धर्म–ये सभी धर्म पूरी तरह से त्याग दिए जाने चाहिएं। इन सबको त्यागकर आपको पूर्ण हृदय से समर्पित होना होगा।

मैं जो हूँ वो हूँ, मैं सदा वही थी और वही रहूंगी, न मैं घटूंगी न बढ़ूंगी। मेरा व्यक्तित्व शाश्वत है। इस आधुनिक समय में अपने जन्म का उपयोग करने के लिए, पूर्ण विकास प्राप्त करने के लिए, और परमात्मा जो कार्य आपसे करवाना चाहता है उसे कार्यान्वित करने के लिए। अब यह आप पर निर्भर करता है कि आप मुझसे कितना कुछ प्राप्त कर सकते है। समर्पण आरम्भ होते ही आप गतिशील हो उठते हैं। निष्ठा पूर्वक इस स्थिति को बनाए

रखें।मैं कहना चाहूंगी कि यह उपलब्धि प्राप्त करने के लिए ध्यान धारणा एकमेव मार्ग है। निःसन्देह तार्किकता की दृष्टि से आप बहुत से कार्य कर सकते हैं। बुद्धि से आप मुझे स्वीकार कर सकते हैं, भावातिरेक में आप अपने ह्रदय में मुझे अपने बिल्कुल समीप महसूस कर सकते हैं। परन्तु ध्यान धारणा के माध्यम से आपको समर्पण करना चाहिए। **समर्पण के अतिरिक्त ध्यान धारणा कुछ भी नहीं।** यह पूर्ण समर्पण है और पश्चिमी देशों के आधुनिक लोगों के लिए ऐसा कर पाना अत्यन्त कठिन कार्य है। पाश्चात्य व्यक्ति तो केवल उन्हीं लोगों के सम्मुख समर्पित होता है जो उसे पूरी तरह से सम्मोहित कर लें। सम्मोहित करने वाले लोगों के वे दास बन जाते हैं परन्तु अपनी स्वतन्त्रता में उनका अहं आत्मा की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली होता है। यही कारण हैं कि सभी स्वतन्त्र देशों का पतन हो गया है वहाँ अहं का प्रभुत्व है आत्मा का नहीं। स्वतन्त्र होने के कारण वे अपने अहं को काबू नहीं कर सकते। कोई यदि उनके अहं को उलझा कर उन्हें सम्मोहित कर ले तभी वे ठीक होते हैं, केवल तभी उनके मुँह बन्द होते हैं और वे सम्मोहन करने वाले के सम्मुख पूरी तरह से समर्पित हो जाते हैं। जिस प्रकार से इन झूठे गुरुओं ने आपको दास बनाने की कला में निपुणता प्राप्त की है उससे यह बात अत्यन्त स्पष्ट है।

अपनी पूर्ण स्वतन्त्रता में, पूर्ण स्वतन्त्रता में आपको समर्पित होना होगा। स्वतन्त्रता का अर्थ अहं नहीं है। यह बात व्यक्ति को समझ लेनी चाहिए कि अहं के कारण स्वतन्त्रता नष्ट हो जाती है, इसकी केवल हत्या ही नहीं हो जाती यह कलंकित हो जाती है, बदसूरत हो जाती है और घिनौनी बन जाती हैं। सूक्ष्मतम रूप में स्वतन्त्रता बिल्कुल अंहकारहित होती है, इसमें बिल्कुल कोणिकता (Angularities) नहीं होती। बांसुरी की तरह से उसमें पूर्ण खालीपन होता है ताकि परमात्मा की मधुर धुन इस पर अच्छी तरह से बजाई जा सके–यही पूर्ण स्वतन्त्रता है, इसमें कोई लटकन नहीं होती।

हमें महसूस करना है कि हम दलदल में फँसे हुए हैं, अज्ञान के दलदल में, पाप के दलदल में। अज्ञान पाप को बढ़ावा देता है। किस प्रकार हम इस दलदल से निकलें। जो व्यक्ति हमें इस दल–दल से खींचने का प्रयत्न करेगा वो भी इसमें फँस जाएगा। दल–दल के समीप आने वाला व्यक्ति दल–दल में फँस जाता है। वह भी इसी दलदल का अंग–प्रत्यंग बन जाता है। अन्य लोगों से जितनी अधिक सहायता लेने का हम प्रयत्न करेंगे उन्हें भी हम उतना ही अधिक दल–दल की ओर घसीटेंगे और इस दल–दल के गर्त में धँसते चले जाएंगे।

अतः कुण्डलिनी के इस वृक्ष को उन्नत होना होगा, विकसित होना होगा और इस वृक्ष से स्वयं परमात्मा, स्वयं परब्रह्म आपको इस दल दल से निकालेंगे। यह वृक्ष इसी

दल–दल से निकलता है और परब्रह्म आप सबको एक–एक करके इससे निकालते हैं, अपने हाथों के झूले पर बिठाकर आपको बाहर निकालते हैं। परन्तु जब आपको बाहर निकाला जाता है तब यदि आपकी पकड़ मजबूत न हुई तो आप पुनः नीचे की ओर फिसल सकते हैं। आप थोड़ा सा ऊपर को आते हैं और फिर नीचे फिसल जाते हैं। दल–दल से बाहर निकल आना अत्यन्त आनन्ददायी है परन्तु अभी तक आपके पैर दल–दल से पूरी तरह बाहर नहीं निकले। अभी तक आप पूर्णतः स्वच्छ नहीं हुए। बिना पूरी तरह स्वच्छ हुए आप पूर्ण आशीर्वाद कैसे प्राप्त कर सकते हैं? परमात्मा का पूरा आशीर्वाद मिलना और परमात्मा के प्रेम–वस्त्र आपको पहनाया जाना आवश्यक है।

आश्चर्य की बात है कि झूठे गुरुओं के पास जाने वाले अपने गुरुओं से किस प्रकार उन पर दृढ़ श्रद्धा बनाए रखते हैं! उनके समर्पण की गहनता आश्चर्यजनक होती है वे दास–सम बन जाते हैं। जब तक उनका पूर्ण विनाश नहीं हो जाता वे अपना सर्वस्व इन गुरुओं को दिए चले जाते हैं। परन्तु सहजयोग में आने पर लोग समर्पण नहीं करते! फिर भी उनकी देखभाल की जाती है, उनका पोषण किया जाता है, उनकी बुद्धि में सुधार होता है, सम्बन्धों में सुधार होता है, हर तरह से वो पहले से अच्छे हो जाते हैं, उनकी परिस्थितियाँ सुधर जाती हैं, हर समय उन्हें सहजयोग का लाभ मिलता रहता है। हमारे आश्रम हैं जो बहुत सुन्दर हैं बहुत सस्ते हैं और वहाँ खाने की तथा अन्य चीज़ों की बहुत अच्छी सुविधा उपलब्ध है, वहाँ सभी कुछ है। परन्तु हम यह महसूस नहीं करते कि ये सारा पोषण किसलिए है, ये सारा पोषण किसलिए है, आपके उत्थान के लिए, आपको पूरी तरह से दल–दल से निकालने के लिए।

अब आपको डटे रहना होगा, समर्पित होना होगा और श्रद्धा करनी होगी। परन्तु हमारी अपनी सीमाएं हैं, हम चीज़ों को छिपाते हैं और चालाक बनने का प्रयत्न करते हैं। यह भयानक स्थिति है। आप सबको अपने अन्तस में देखने का प्रयत्न करना चाहिए कि अभी तक भी मुझमें ऐसा क्या है? कौन से बन्धन अभी भी आपको समर्पण से दूर किए हुए हैं? कौन सी चीज़ आपको सीमित कर रही है, कौन सी लड़ाई, कौन सा अहम्, कौन सा दृष्टिकोण आपको अभी भी इस दल–दल में फँसाए हुए है। कौन से मोह, कौन से सम्बन्ध? आपको इनसे मुक्त होना होगा। इन बन्धनों से जब तक आप मुक्त नहीं हो जाते तब तक यह कार्यान्वित न होगा।

अधपके लोगों के लिए कोई स्थान नहीं है। यह "अब या कभी नहीं का प्रश्न है, ईसामसीह ने भी यही बात कही है।" उन्होंने कहा था, "आप अपनी श्रद्धा और समर्पण मुझे दें और बाकी सब कुछ मुझपर छोड़ दें। मैं जानती हूँ कि श्रद्धा और समर्पण में

कौन–कौन लोग उन्नत हो रहे हैं। मैंने लोगों को बहुत उन्नत होते हुए देखा है। उन्हें मुझसे मिलने की या मेरे पास आने की कोई आवश्यकता नहीं। मेरा उनके समीप होना आवश्यक नहीं। सर्वव्याप्त शक्ति में ये सब विद्यमान है। ये सब तो मेरी जीवन शैली है जो आपके विषय में सभी कुछ जानती है। केवल अपनी भक्ति से, अपनी श्रद्धा और समर्पण से आप मुझे प्राप्त कर सकते हैं।

आपकी दिव्य शक्तियों की पूर्ण–अभिव्यक्ति ही मेरी उपलब्धि है। यह अत्यन्त सहज है, इसे सहज बना दिया गया है। मैं केवल उन्हीं लोगों से प्रसन्न होती हूँ जो सहज एवं अबोध हैं, जो चालाक नहीं हैं, जो प्रेममय हैं, जो परस्पर स्नेह करते हैं। मुझे प्रसन्न करना अत्यन्त सुगम है। जब मैं आपको परस्पर प्रेम करते हुए, एक दूसरे की प्रशंसा करते हुए, परस्पर सहायता करते हुए, सम्मान करते हुए, मिलकर हँसते हुए, एक दूसरे की संगति का आनन्द लेते हुए देखती हूँ तो मुझे पहली प्रसन्नता, पहला आनन्द प्राप्त होता है।

पूर्ण समर्पण की स्थिति में परस्पर प्रेम करने का प्रयत्न करे क्योंकि आप सब मेरे बच्चे हैं और मैंने अपने प्रेम से आपका सृजन किया है। मेरे प्रेम के गर्भ में आप सब निवास करते हैं। अपने हृदय से मैंने आपको ये आशीष दी है। जब मैं आप लोगों को परस्पर लड़ते हुए देखती हूँ तो मैं परेशान हो उठती हूँ, मेरे हाथ काँपने लगते हैं और आप एक बार पुनः उसी दल–दल में जा गिरते हैं–अपने पूर्व जीवन की ईर्ष्याओं और तुच्छ जीवन के दल–दल में। आपको दी गई सहायता इतनी स्थूल नहीं होती जिसे महसूस किया जा सके। आपके भाई–बहनों को प्रदान की गई सुरक्षा–भावना अत्यन्त सूक्ष्म है। गहन प्रेम बना रहना चाहिए। सहजयोग में स्वार्थपरता का कोई स्थान नहीं, कंजूसी का सहजयोग में कोई स्थान नहीं। इसका बिल्कुल भी कोई स्थान नहीं हैं क्योंकि कंजूसी तो संकीर्ण बुद्धि का चिन्ह है। निःसन्देह मैं आपको नहीं कहती कि आप मुझे धन दें। परन्तु जिस प्रकार से हम धन को देखते हैं, जिस प्रकार से इससे चिपके रहते हैं; जिस प्रकार भौतिक वस्तुओं तथा भौतिक वैभव, भौतिक पदार्थों और भौतिक उपलब्धियों से चिपके रहते हैं यह अत्यन्त घातक है।

आपकी माँ आपकी महानतम सम्पति हैं। उन्हीं के माध्यम से आपको भाई-बहन प्राप्त हुए हैं।

उस भूतकाल से, उस बीते हुए जीवन से उस दल–दल से मुक्ति पा लें। ये सब अब समाप्त हो जाना चाहिए। आप भली–भांति जानते हैं कि किस प्रकार मेरी प्रेम शक्ति ने आप सबकी रक्षा की। आप ये भी जानते हैं कि हर क्षण किस प्रकार मैंने आपकी सहायता की और जब–जब भी आपने कोई इच्छा की उसे पूर्ण करने के लिए मैं आगे आई। यह, जैसा मैंने कहा, एक पक्ष है–पोषण। परन्तु अब आपका

उत्थान, आपके अन्दर से आना चाहिए। उत्थान आपके अन्दर से होना चाहिए। इसे आपने प्राप्त करना है, केवल आपने। यह कार्य न तो कोई और सहजयोगी करेगा और न ही मैं। मैं तो केवल आपको सुझाव दे सकती हूँ। केवल सुझाव ही नहीं दे सकती चेतावनी भी दे सकती हूँ। सभी कुछ उपलब्ध है, सभी कुछ भली-भांति कार्यान्वित किया जा चुका है, मुझे सूचित किया जा चुका है, मुझे पहले ही सूचित किया जा चुका है। आपको कहीं जाने की आवश्यकता नहीं है। सभी कुछ आपके अन्दर विद्यमान है। आपको धन नहीं देना, कुछ भी नहीं देना परन्तु वह समर्पण अपने में विकसित करें।

आप देखें इस व्यक्ति ने मेरा साक्षात्कार (Interview) लिया। इसने कहा कि राजनीतिज्ञ बेरोजगार लोगों का गलत ढंग से संचालन करते हैं। परमात्मा को अपना संचालन करने दें। परन्तु कैसे? मान लो मेरे हाथ में एक तूलिका है और मैं कोई चित्र बनाना चाहती हूँ , परन्तु मैं तूलिका नहीं चला सकती। तूलिका कोणीय है और कष्टकर है। इसे चला पाना कठिन है या कष्टदायक है। ये अत्यन्त भद्दी एवं घिनौनी है। किस प्रकार आप इसे उपयोग कर सकते हैं?

"समर्पण, अपनी सारी कोणीयता अपनी सारी समस्याओं, अपनी सारी बाधाओं से मुक्ति पाने का सुगमतम उपाय है।"

अब अपने अन्दर झाँककर देखें कि "क्या आप समर्पित हैं?" जो लोग धर्मान्धता पूर्वक मेरा अनुसरण करते हैं वे भी ठीक नहीं है। इस विषय में भी धर्मान्धता नहीं होनी चाहिए। सभी कुछ पूर्णतः युक्तियुक्त बन जाता है। इसके विषय में कोई धर्मान्धता नहीं है।

जैसे कोई कहता है; "मुझे डॉक्टर के पास जाना है, डॉक्टर से मिलना है।" तब धर्मान्ध व्यक्ति कह सकता है, "ओह! मैं डॉक्टर के पास नहीं जा रहा हूँ, मैं नहीं जा रहा हूँ क्योंकि श्रीमाताजी ने मुझसे कहा कि वे मेरी रक्षा करेंगी और जब वह बीमार पड़ जाता है तो आकर श्रीमाताजी से लड़ता है, "माँ आपने मुझे बताया था कि आप मेरी देखभाल करती हैं, अब मैं बीमार क्यों पड़ गया? यह धर्मान्धता है।

समर्पण क्या है? अपने अन्तस में आपको कहना चाहिए, "ये श्रीमाताजी हैं, वे विद्यमान हैं वही मेरी चिकित्सका हैं। वो मेरा इलाज करती हैं या नहीं, मुझे रोगमुक्त करती हैं या नहीं इसके विषय में' मुझे कुछ नहीं कहना। 'मैं केवल उन्हीं को पहचानता हूँ, किसी अन्य को नहीं पहचानता।" ये बात अत्यन्त युक्तियुक्त है। तर्क ये है कि माँ सर्वशक्तिशाली हैं और इस बात को आप जानते हैं, ये सत्य है। यदि वे सर्वशक्तिशाली हैं तो वो मुझे रोगमुक्त करेंगी। परन्तु यदि वे मुझे ठीक नहीं करती तो ये उनकी इच्छा है, उनकी शक्ति है। वो यदि मुझे ठीक करना चाहेंगी तो ठीक कर देंगी। और यदि वे मुझे ठीक नहीं करना चाहती

तो किस प्रकार मैं अपनी इच्छा उनपर थोप सकता हूँ?"

श्री गणेश के समर्पण की तरह से–जब उनकी माँ ने कहा, "ठीक है आप दोनों भाइयों में से–कार्तिकेय और श्री गणेश – जो भी पहले पृथ्वी की परिक्रमा करेगा उसे इनाम मिलेगा।" अब बेचारे श्री गणेश का वाहन तो छोटा सा मूषक था। परन्तु उनके पास विवेक का चातुर्य था। दूसरी ओर कार्तिकेय के पास वेग पूर्वक उड़ने वाला मोर वाहन था। श्री गणेश ने मोर की ओर देखा और कहा, "मेरी माँ से महान कौन है? वे आदिशक्ति हैं। ये पृथ्वी उनका क्या मुकाबला कर सकती है? पृथ्वी का सृजन किसने किया है? मेरी माँ ने ही पृथ्वी को बनाया है सूर्य का सृजन किसने किया है? मेरी माँ ने ही सूर्य का सृजन किया है। मेरी माँ से महान कौन है? कोई भी नहीं। क्यों न मैं अपनी माँ की परिक्रमा करुं? पूरी पृथ्वी की परिक्रमा करने की क्या आवश्यकता है? इससे पूर्व की कार्तिकेय पृथ्वी की परिक्रमा करके लौटते अपने हाथों में इनाम लेकर श्रीगणेश बैठे हुए थे।

ये सब समझने का विवेक उन्हें उनकी अबोधिता ने प्रदान किया था–यही बात युक्तियुक्त है–अत्यन्त युक्तियुक्त और ये भी युक्तियुक्त है कि श्रीमाताजी मेरे दर्द को मुझसे भी अधिक महसूस करती हैं। अपनी माँ के लिए ईसा–मसीह के क्रूसारोपित होने के विषय में आपका क्या कहना है? वे स्वयं महालक्ष्मी थीं, इतनी शक्तिशाली। उन्होंने अपने पुत्र को इस प्रकार से बलिदान करवा दिया, उन्हें सामान्य मनुष्य की तरह से कष्ट सहन करवाए। ये बहुत बड़ी बात थी। आपमें सर्वनाश करने की शक्तियाँ हों फिर भी अपने पुत्र का बलिदान करवा देना! आज्ञा चक्र का सृजन करना बहुत ही सूक्ष्म कार्य था।

इसका क्या अर्थ है? क्या इसका अर्थ ये है कि उनके समर्पण में कोई कमी थी? इसके विपरीत उन्हें तो ईसा मसीह पर, उनके समर्पण पर पूर्ण विश्वास था कि वे उन्हें बलिदान के लिए कह सकती हैं। आप अपनी माँ से कुछ भी करने की आशा करते हैं–ऐसे भी लोग हैं जो कहते हैं "माँ मैं यह शोध प्रबन्ध (Thesis) दे रहा हूँ मुझे उपाधि मिल जानी चाहिए। ठीक है बन्धन दो आपको उपाधि मिल जाएगी "श्रीमाताजी मैं ये कार्य करना चाह रहा हूँ , ठीक है आप ये कर लो। श्रीमाताजी मैं ये नौकरी पाने का प्रयास कर रहा हूँ , ठीक है तुम इसे पा लो।

एक अन्य उपाय भी है। कितने लोगों का समर्पण ईसा मसीह सम है किसी का भी नहीं, यह बात सत्य है।

ईसा मसीह बड़े भाई क्यों हैं? क्योंकि उन जैसा कोई भी नहीं। उन्होंने सब कुछ सहन किया – सारे भयानक कष्ट सहन किए – क्योंकि वे अपनी माँ के अंग–प्रत्यंग थे। उनकी माँ ने उनसे भी अधिक कष्ट उठाए। महान लक्ष्य, महान प्रसन्नता, महान तथा उच्च जीवन के लिए वे उन कष्टों में

से गुजरीं। परन्तु ये झूठे लोग इन सभी बातों का लाभ उठा सकते हैं। जब ये लोगों को दुख देते हैं तो उन्हें कहते हैं "आखिरकार आपको ये कष्ट उठाने ही हैं।" देखें किस प्रकार से ये चीज़ों को घुमाते हैं! "आपको कष्ट उठाने ही होंगे, आपको कष्ट उठाने हैं, बिना कष्ट उठाए आप आरम्भ ही नहीं कर सकते।" यह अत्यन्त सूक्ष्म सूझ–बूझ है, अत्यन्त सूक्ष्म। यह इस बात को स्पष्ट कर देगी कि सहजयोग में पहले आपका पोषण किया जाता है, आपका लालन–पालन किया जाता है, आपको प्रशिक्षित किया जाता है, ठीक किया जाता है। उसके पश्चात् जो भी कुछ आप करते हैं जो भी कष्ट आप उठाते हैं वो आपके लिए कष्ट नहीं होते क्योंकि आप आत्मा बन चुके होते है:

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः

आत्मा को न शस्त्र काट सकते हैं, न वायु उड़ा सकती है न अग्नि जला सकती है। आत्मा किसी भी तरह से नष्ट नहीं की जा सकती। आप वही आत्मा हैं। अब आपका पोषण हो चुका है, आप उन्नत हो चुके हैं, पोषित हो चुके हैं। लोग जब सहजयोगियों को देखते हैं तो कहते हैं कि ये पुष्प–सम हैं। उनके चेहरे तेजोमय हैं। वे कितने आत्मविश्वास पूर्ण कितने सम्मानजनक और कितने सुन्दर हैं!

परन्तु किसलिए? – "परमात्मा के रथ के पहिए बनने के लिए।"

आप ही लोगों को अग्रिम मोर्चे पर मुकाबला करना होगा और बलिदान देना होगा– और ये बलिदान आपके लिए तुच्छ है क्योंकि आत्मा तो केवल देती है, बलिदान नहीं लेती। देना इसका गुण है अतः आप बलिदान नहीं करते, मात्र देते हैं।

सर्वप्रथम माँ को प्रसव पीड़ा होती है। ठीक है। उसे सभी प्रकार के कष्ट होते हैं। ठीक है। परन्तु बच्चा जब बड़ा हो जाता है तो माँ को उस पर गर्व होता है, माँ को पुत्र पर गर्व होता है और पुत्र को माँ पर। एक साथ खड़े होकर वे लड़ाई लड़ते हैं। ऐसा होना तभी सम्भव है जब आप पूर्ण समर्पण और सहजयोगी के रूप में भविष्य के जीवन की तैयारी को स्वीकार करेंगे। एक ऐसा जीवन जो बाहर से संघर्षों और समस्याओं से भरा हुआ दिखाई देता है परन्तु अन्दर से अत्यन्त सन्तुष्टि दायक है।

आरम्भ में जब सहजयोगी मेरे पास आते थे तो पृथ्वी पर बैठना भी वो बहुत बड़ा बलिदान मानते थे। जूते उतार कर बैठना भी बड़ा बलिदान माना जाता था। कल के कार्यक्रम से तीन लोग उठकर चले गए क्योंकि जूते उतारने के लिए कहा गया था। मानों कोई उनका सिर गंजा कर रहा हो! वे उठकर चले गए। सहजयोग में हमें किसलिए विकसित होना है। आगे बढ़ने के लिए, अपने पैरों पर खड़े होने के लिए, महान माँ के महान बच्चों की तरह।

कार्य अत्यन्त कठिन है। यह कार्य (सहजयोग) मध्यम दर्जे के लोगों के लिए नहीं है। डरे हुए, भीरू, अक्खड, धृष्ट लोग यह कार्य नहीं कर सकते। उनमें ये कार्य करने का क्षेम नहीं है।

अतः ध्यानधारणा में पूर्ण समर्पण का अभ्यास होना अत्यन्त आवश्यक है। अतः भौतिक पदार्थों के लिए जो भी कार्य आप अब कर रहे हैं वह आपके हित में नहीं। पहले तो आप नन्हें बच्चे थे, बहुत छोटे थे। अब आपका सामूहिक अस्तित्व है। कोई भी कार्य आप अपने लिए नहीं कर रहे। उस सामूहिक व्यक्ति के लिए कर रहे हैं। उस विराट की चेतना प्राप्त करने के लिए आप उन्नत हो रहे हैं। यही, यही पूर्णत्व आपने प्राप्त करना है। आपकी नौकरियाँ, आपका पैसा या आपका धन, आपकी पत्नी, आपके पति, आपके बच्चे, माताएं, सम्बन्धी ये सब मोह अब समाप्त हो गए हैं। अब आप सबको सहजयोग की जिम्मेदारी उठानी होगी। आप सभी समर्थ हैं और इसीलिए आपका पालन किया गया है। जैसे भी आपको अच्छा लगे, जितनी भी आपकी क्षमता है वैसे कार्य करें। पूर्ण समर्पण से आप इसे प्राप्त करेंगे। समर्पण ही एकमात्र चीज़ है।

पूर्ण समर्पण आगे उन्नत होने का एकमेव मार्ग है। कुछ सहजयोगी अधपके हैं। हमें उन्हें छोड़ देना होगा। हम उन्हें अपने साथ नहीं रख सकते। उनके प्रति सहानुभूति नहीं रखनी, उसका कोई लाभ नहीं। वो यदि ठीक ही जाएंगे तो हम उन्हें वापिस ले आएंगे। आप ये सब मुझ पर छोड़ दें। उनकी ओर न तो अपना चित्त दें न ही उनके लिए प्रयत्न करें। स्वयं आपको उन्नत होना होगा। आप साधक थे, आपने प्राप्त कर लिया है, इससे पोषण प्राप्त किया है और अब आप उन्नत हो गए हैं। किसलिए? अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए। आज मैं जिस प्रकार आपका सामना कर रही हूँ आपको भी अन्य लोगों का सामना करना है।

समर्पण का अर्थ ये नहीं है कि आप किसी से सहजयोग की बात ही न करें। कुछ लोग सोचते हैं कि मौन रहना ही समर्पण का एकमात्र मार्ग है। आपको केवल ध्यान–धारणा में रहना है। परन्तु अभी आपको इस मौन से बाहर निकलना है। सभी देशों को या सभी राष्ट्रों को, सभी लोगों को, सर्वत्र, ये महान संदेश दें कि पुनरुत्थान या पुनर्जन्म का समय आ गया है। यही वह समय है और आप सब लोगों में यह कार्य करने की योग्यता है।

कोई यदि इस कार्य के लिए आपका मज़ाक उड़ाता है तो सूझबूझ और विवेक के साथ कार्य करने का प्रयत्न करें। व्यक्तिगत पसन्द और नापसन्द बलिदान कर दिए जाने चाहिएं। 'मुझे ये पसन्द है, मुझे वो पसन्द है, त्याग दिए जाने चाहिएं। ऐसा कहने का ये अभिप्राय भी नहीं है कि आप मशीनसम बन जाएं। नहीं। परन्तु 'मैं' का दासत्व त्याग दिया जाना आवश्यक

है। आदतों की गुलामी का त्याग भी आवश्यक है। आप हैरान होंगे कि एक बार समर्पित हो जाने के पश्चात् आप बहुत कम खाने लगेंगे, कई बार तो आप बिल्कुल भी कुछ न खाएंगे, आपको भोजन की याद ही न रहेगी। आपको ये भी याद न रहेगा कि आपने क्या खाया है। आप ये भी याद न रख सकेंगे कि आप कहाँ सोए थे और कैसे। आपका यह जीवन दूरबीन की तरह होगा – विस्तृत होता हुआ। अपने स्वप्नों का आप स्वयं सृजन करेंगे उन्हें पूर्ण करेंगे उनमें सन्तुष्ट होंगे। आप अत्यन्त सामान्य एवं साधारण दिखाई पड़ते हैं, परन्तु वास्तव में आप ऐसे नहीं। पूर्ण समर्पण में, पूर्ण श्रद्धा के साथ आपने अब ये कार्य करना है–केवल अपने हित के लिए, केवल व्यक्तिगत उपलब्धियाँ प्राप्त करने के लिए नहीं। वह सब अब समाप्त हो गया है अब आपने माया के दल–दल से मुक्त होने के लिए दृढ़ भूमि पर खड़े होने के लिए और ऊँची आवाज़ में अपने परम पिता की स्तुतिगान करने के लिए कार्य करना है।

भ्रमजाल में फँसे लोग क्या संगीत दे सकते हैं? वे कौन से गीत गा सकते हैं, कौन सी सुरक्षा प्रदान कर सकते हैं, तथा अन्य लोगों की वे क्या सहायता कर सकते हैं?

आपको इससे पूर्णतः बाहर आना होगा। इसके लिए निरन्तर विवेक की आवश्यकता है–निरन्तर विवेक की । हर पल। इसके लिए आपको अपने बाएं या दाएं के विकारों को नहीं कोसना। कुछ भी नहीं – आप बस इससे मुक्ति पा लें। इस बात पर दृढ़ रहें। आपकी देखभाल करने के लिए साक्षात परब्रह्म आए हैं। दृढ़ता से उन्हें पकड़े रखें। मृत्यु को भी वापिस जाना होगा, इन छोटी–छोटी चीज़ों की तो बात ही क्या है।

आपकी माँ का नाम अत्यन्त शक्तिशाली है। आप जानते हैं कि अन्य सभी नामों से यह नाम कहीं शक्तिशाली है, यह अत्यन्त शक्तिशाली मंत्र है। परन्तु आपको इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि किस प्रकार ये मंत्र लेना हैं। अत्यन्त समर्पण पूर्वक आपको यह नाम लेना है, किसी अन्य नाम की तरह नहीं।

आप जानते हैं कि भारत में गुरु का नाम लेते हुए लोग अपने कान पकड़ते हैं– गुरु का नाम लेने के लिए। अर्थात, "नाम लेते हुए यदि मुझसे कोई गलती हुई हो तो मुझे क्षमा कर दीजिए"–कान पकड़ने का ये अर्थ हैं। ये मंत्र अत्यन्त शक्तिशाली मंत्र है। आपको यदि आवश्यकता है तो समर्पण की, समर्पण रूपी प्रध्वंसक (Dynamite) की। आज मैंने आपको बताया था कि अब इंग्लैण्ड के सभी डेज़ी फूल सुगन्धमय हो गए हैं। वह महिला इस बात पर विश्वास न कर सकी कहने लगी, "मुझे इस बात का कभी ज्ञान न होगा। इसके विपरीत मैंने तो सदा यही महसूस किया कि डेज़ी पुष्पों में सुगन्ध का पूर्ण अभाव है और ये अत्यन्त अजीब गन्ध वाले फूल हैं।" मैंने

कहा, "ये डेज़ी फूल हैं जाकर इन्हें सूंघो।" उसने जब ये पुष्प सूंघे तो आश्चर्यचकित रह गई! आश्चर्यचकित! कितनी सूक्ष्म बात है! आज डेज़ी पुष्प इंग्लैण्ड के सर्वाधिक सुगन्धित पुष्प हैं। मात्र नाम का प्रभाव है! इसका अर्थ है निष्कलंका अर्थात निर्मला अर्थात 'मलविहीन'। ये मल क्या है? यह भ्रम है। 'बिना किसी भ्रम के।' निः अर्थात पूर्णतः सहस्रार का आनन्द हमेशा से निरानन्द कहलाता है। युगों–युगों से इसे निरानन्द या निर्मलानन्द कहते हैं। यह आनन्द ऐसा आनन्द है जिसका आप क्रूसारोपित होकर भी आनन्द लेते हैं। ये ऐसा आनन्द है कि विषपान करके भी आप इसका मज़ा उठाते हैं, मृत्युशय्या पर भी आप इसका आनन्द उठाते हैं। इसे निर्मलानन्द कहते हैं। अतः दूसरी अवस्था के लिए तैयार हो जाएं। आप मोर्चे पर हैं। मुझे बहुत ही कम समय की आवश्यकता है। वास्तव में मुझे निरन्तर विवेक तथा समर्पण वाले लोगों की आवश्यकता है। निरन्तर। क्षण भर के लिए भी यह विवेक एवं श्रद्धा डांवाडोल नहीं होनी चाहिए। केवल तभी हम तेजी से उन्नत हो सकेंगे और युद्ध के मैदान में आगे बढ़ सकेंगे। संभवतः अब तक आपको नकारात्मकता की सूक्ष्मताओं का ज्ञान हो गया होगा और इस बात का भी कि किस प्रकार से परमात्मा के कार्य को नष्ट करने के लिए वे अपनी शक्तियों का उपयोग करती हैं। निःसन्देह नकारात्मक शक्तियाँ सीमित हैं। इनके विरुद्ध आपने किस प्रकार से चौकन्ना, तैयार और समर्पित रहना है। यह बात मैं सिर्फ आप लोगों से कर सकती हूँ, उन लोगों से नहीं जो केक्सटन सभागार (Caxton Hall) आते हैं। उनमें से कुछ अधपके हैं, कुछ बिल्कुल नए हैं, भोले भाले हैं और कुछ पूर्णतः तीसरे दर्जे के। परन्तु यहाँ जिस प्रकार से आज आप मेरे सम्मुख है मैं आपसे वैसे ही स्पष्ट बता देना चाहती हूँ जिस प्रकार से श्री कृष्ण ने अर्जुन को बताया था।

सर्व धर्माणाम परित्यज्य, मामेकम शरणम व्रज।

इसके अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं। व्रज का अर्थ है जिसने पुनर्जन्म प्राप्त कर लिया है। अत्यन्त अत्यन्त सुदृढ़ व्यक्तित्व। जब आप सुदृढ़ हो जाएं तो अवश्य समर्पित हो जाएं, जब आप कुशल हो जाएं तो अवश्य समर्पित हो जाएं।

इससे भ्रम मुक्त होने में आपको सहायता मिलेगी और महान लक्ष्य प्राप्ति में भी यह सहायक होगा। कोई भी नहीं समझता कि "क्यों श्रीमाताजी मेरी सहायता करने का प्रयत्न कर रही हैं?" वो सोचते हैं कि वे बहुत उदार हैं। मैं उदार नहीं हूँ। मुझमें सहजबुद्धि का प्राचुर्य हैं। क्योंकि आप लोग ही परमात्मा के आनन्द की अभिव्यक्ति पृथ्वी पर करने के योग्य हैं, आप ही वह बाँसुरियाँ हैं जो परमात्मा की मधुर धुनों को बजाएंगी, परमात्मा आपका उपयोग करेंगे और आपका संचालन करेंगे। मैं यह सब आपको कुशल बनाने के लिए कर रही हूँ

ताकि आप परमात्मा के सुन्दरतम माध्यम बन सकें, उचित माध्यम बन सकें। मैं नहीं जानती कि आप इस बात को समझते भी हैं या नहीं कि वह जीवन कितना मधुर, कितना सुन्दर होगा–समर्पण का जीवन, सूझ–बूझ से परिपूर्ण, अत्यन्त युक्तियुक्त। पूर्णतः समर्पित, पूरा पोषण प्राप्त करते हुए और उच्च लक्ष्य के लिए इसे समर्पित करते हुए। बिल्कुल वैसे ही जैसे पत्ते उच्च लक्ष्य के लिए सूर्य की किरणों से पोषण प्राप्त करके भिन्न रंगों को प्राप्त करते हैं ताकि मानव इनका उपयोग कर सके। कोई भी चीज़ इसके लिए कार्यान्वित होती है परन्तु इतना निःस्वार्थ, इतना विस्तृत, इतना महान गतिशील लक्ष्य!

आप सागर बन जाते हैं, चाँद बन जाते हैं, सूर्य बन जाते हैं, पृथ्वी बन जाते हैं, आप आकाश बन जाते हैं, महा व्योम बन जाते हैं – और आप आत्मा बन जाते हैं। सभी सितारे और ब्रह्माण्ड बनकर आप उनका कार्य संभाल लेते हैं। यह इतनी महान चीज़ है! क्योंकि आप अपने तत्व पर कूद पड़े हैं। इसी प्रकार आप सभी के तत्व पर पहुँच सकते हैं। परन्तु उस तत्व के प्रति समर्पित रहें क्योंकि मैं ही इन सबका तत्व हूँ। मैं ही तत्व हूँ – 'तत्वमयः'। मैं ही तत्व हूँ , अपने तत्व से जुड़े रहें।

मैं कुण्डलिनी हूँ , मैं ही सार तत्व हूँ। हम केवल उसी चीज़ के समर्पण को समझते हैं जो स्थूल रूप से बड़ी दिखाई देती है, जो स्थूल रूप में दिखाई देती है। परन्तु अत्यन्त सूक्ष्म, अत्यन्त गहन, अत्यन्त प्रभावशाली अत्यन्त गतिशील, निरन्तर एवं शाश्वत् चीज़ों के प्रति हम समर्पित नहीं होते। उनके प्रति समर्पित होने के विषय में हम सोच भी नहीं सकते। पर्वत सम दिखाई देने वाले किसी भी विशालकाय व्यक्ति के सम्मुख जो हमें सताने के लिए आता हो, जो हिटलर की तरह से हो, जो कुगुरु हो, हम समर्पित हो सकते हैं। परन्तु अपने सूक्ष्म अस्तित्व के सम्मुख – जिसे आप अपनी आँखों से देख नहीं सकते, कानों से जो सुनाई नहीं देता, अणु बम की तरह से जिसका प्रभाव अत्यन्त शक्तिशाली है – समर्पित होना हमारे लिए कठिन है। बिना विखण्डित हुए अणु सर्वत्र होता है परन्तु विखण्डित होने पर यह इतना गतिशील हो उठता है कि आप इसे स्वीकार कर लेते हैं। तब यह ऊर्जा की अत्यन्त गतिशील शक्ति बन जाता है। अब क्योंकि आपका चित्त ब्रह्माण्ड की सूक्ष्मता में प्रवेश कर गया है अतः और अधिक गहनता में उतरते जाएं। जड़ को जल के स्रोत तक ले जाने वाली पृथ्वी उस स्रोत की तरह से ही है। आपकी कुण्डलिनी भी आदिकुण्डलिनी की तरह से है और परब्रह्म इसकी शक्ति हैं।

ये सब चीज़ें आत्म–साक्षात्कार के पश्चात् परिपक्वता प्राप्त करने के बाद समझ आएंगी। इससे पूर्व इन्हें समझ पाना असंभव है। यही कारण है कि पिछले आठ वर्षों में मैंने आपसे ये सारी बातें नहीं कहीं। आपके साथ मेरा व्यवहार अत्यन्त मधुर एवं उत्साह

बढ़ाने वाला था। सदैव मैंने आपको यही महसूस करवाया कि आप मुझ पर एहसान कर रहे हैं। ये कोई आसान कार्य नहीं है।

इन सभी धारणाओं से परे आप अपनी आत्मा (Spirit) बन गए हैं, ज़िम्मेदार बनने के लिए, वह बनने के लिए जिसके लिए आप बने हैं, अब आप तैयार हैं।

जैसे समुद्री जहाज को बनाकर समुद्र में लाया जाता है, उसे परखा जाता है और देखा जाता है कि यह अब समुद्र में तैरने के योग्य है। अब यह दूसरी अवस्था है जहाँ पर आपने निकल पड़ना (Sailout) है, जब आपको जहाज और समुद्र का पूर्ण ज्ञान है। पूर्ण स्वतन्त्रता और विवेक के साथ आपने अपने लंगर खोल देने हैं। बिना आँधी, तूफानों और चक्रवातों से डरे, क्योंकि अब आपको सारा ज्ञान है। पार करते जाना आपका कार्य है।

परमात्मा आपको धन्य करें।

जन कार्यक्रम

नोएडा, 18.3.89

(परम् पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन)

सत्य को खोजने वाले सभी साधकों को हमारा प्रणाम्। सब से पहले, तो बड़े दुःख की बात है कि इतनी देर से आना हुआ। और Aeroplane में इतनी देरी हो गई और आप लोग इतनी उत्कण्ठा से, इतनी सबूरी के साथ, सब लोग यहाँ बैठे हुए हैं और हम वहाँ से, असहाय माँ, जो सोच रही थी कि किस तरह से वहाँ पहुँच जाएं। आप लोगों को देख कर ऐसा लगता है, कि ये दुनिया बदलने के दिन आ ही गए हैं, आप की उत्कण्ठा बिल्कुल जाहिर है, और आप की इच्छा यही है कि हम सत्य को प्राप्त करें।

सत्य के बारे में एक बात कहनी है कि सत्य जैसा है, वैसा ही है। अगर हम चाहें कि हम उसे बदल दें, तो उसे बदल नहीं सकते और अगर हम चाहें कि अपनी बुद्धि से या मन से कोई एक धारणा बना कर उसे सत्य कहें तो वह सत्य नहीं हो सकता। तो सत्य क्या है? सत्य एक है कि 'हम

सब आत्मा हैं।' 'हम आत्मा स्वरूप हैं।' इतनी यहाँ सुन्दरता से सजावट की है और इतने यहाँ दीप जलाए हुए हैं जिन्होंने प्रकाश किया है जिससे हम एक–दूसरे को देख रहे हैं और जान रहे हैं। पर अगर यहाँ अज्ञान का अंधकार हो, अंधियारा छाया हुआ हो, और हम उस अज्ञान में खोए हुए हैं, तो एक ही बात जाननी चाहिए कि हम सब प्रकाशमय हो सकते हैं और हमारे अन्दर भी दीप जल सकता है। और ये दीप हम बहुत आसानी से प्रज्जवलित कर सकते हैं, जला सकते हैं, और उसका उजाला सारे संसार में हम फैला सकते हैं।

आज तक परमात्मा के नाम पर बड़ी मेहनत की गई है। परमात्मा के विश्वास पर ही हम लोग जुटे रहे हैं। ये बात और किसी देश में नहीं, जो हमारे देश में है, कि कितनी भी विपत्ति आए, कितनी भी तकलीफ़ हुई, तो हम सोचते रहे कि एक दिन ऐसा आएगा, कि परमात्मा हमें जरूर रास्ता दिखाएगा और हम उस स्वर्ण दिन की राह देखते रहे जहाँ हम अपने मोक्ष को प्राप्त करें। हमें सिर्फ अपने अज्ञान से मोक्ष मिला है और ये अज्ञान हमारे अन्दर तरह–तरह की चीजों से आ बसा है। जैसे कि बचपन से कोई बात बताई जाती है, चार लोगों से सुनते हैं, या हम किसी एक धर्म में पैदा हो गए, तो उस धर्म की बातें जो चल पड़ीं, वही हमारे लिए विशेष हो जाती हैं। और वो हर जगह अलग–अलग रूप लेकर, ऐसी कुछ विचित्र हो जाती हैं कि हमारे बच्चे पूछते हैं, कि ये सब करने से क्या फायदा हुआ? आप इतना सब कुछ करते हैं, लेकिन आप को तो कोई अन्तर नहीं हुआ। और कोई आदमी, चाहे हिन्दु हो, चाहे मुसलमान हो, चाहे ईसाई हो, चाहे सिख हो, हर जाति का, हर धर्म का आदमी, हर प्रकार का पाप कर सकता है। हर तरह का गुनाह कर सकता है, ये कैसी बात है? अगर हम लोग धार्मिक हैं, और हमारे अन्दर अगर धर्म है, तो हमसे गुनाह कैसे होता है?

लेकिन हम देखते हैं कि जो बड़े–बड़े साधु संत हो गए हैं, जिनके हमारे सामने इतने उदाहरण हैं, वो लोग कभी गलत नहीं करते। और वो लोग गलत लोगों के सामने झुकते भी नहीं। आप यहाँ औलिया निजामुद्दीन साहब के बारे में जानते हैं। शाह ने कहा था, अगर तू मेरे आगे झुकेगा नहीं तो मैं तेरी गर्दन उड़ा दूँगा। वो झुके नहीं और कहा, मैं परमात्मा के सामने झुकता हूँ। और आप आगे भी जानते हैं कि उसके बाद उसी शाह की ही गर्दन उड़ गई। सो इस तरह के जो साधु–सन्त इतने हिम्मत के साथ और इतने सूझ–बूझ के साथ किसी बात को कहते थे उनकी कौन सी अहमियत थी, उनमें कौन सी खास बात थी, जो वो हम लोगों से इतने बड़े और ऊपर एक ऐसी दशा में थे, जहाँ उनको कोई भी चीज़ ऐसे प्रतीत ही नहीं होती थी जो सत्य को छोड़कर अपनाएं।

वो अटूट अपने विश्वासों पर पूरी तरह से खड़े थे, क्योंकि उनके विश्वास अन्धे नहीं थे, जो विश्वास थे वो जानते थे कि ये बात सत्य है और आज जबकि हम अपनी आत्मा को खोज रहे हैं तो उसके प्रकाश में ये जान जाएंगे कि ये जो सत्य है, वो आत्मा के प्रकाश में ही जाना जा सकता है।

हर एक धर्म, संसार का हर एक धर्म, अगर आप थोड़ा सा जान लें, तो समझ लेंगे कि तत्व में हर एक धर्म एक है। और हर एक धर्म में एक ही बात बताई गई है कि हमें नश्वर चीज़ों को छोड़ कर के जो चिरंजीव, जो अनन्त चीज़ है उसे लेना चाहिए। हम लोग बहुत बार सांसारिक बातों में इस तरह से लिपट जाते हैं कि इस चीज़ को भूल जाते हैं, कि जो नश्वर चीज़ें हैं वो जहाँ तक हैं, वहाँ ठीक हैं। लेकिन इसमें अतिशयता करने से हमारा सर्वनाश हो जाता है, क्योंकि वो ही स्वयं नाशमय है। अन्त में हमारा भी नाश उससे हो जाता है। लेकिन इस सब को जानने के लिए हमारे अन्दर ज्ञान होना चाहिए। **ज्ञान का मतलब ये नहीं कि पढ़ना लिखना।** बहुत से लोग हैं जो हमको बताते हैं कि हम तो रोज़ शिवलीला–अमृत पढ़ते हैं, और हम रोज़ एक पूरा उसका अध्याय पूरा करते हैं। लेकिन आपके अंदर उससे कोई परिवर्तन हुआ? क्या आप शिवलीला–अमृत पढ़ने के बाद ऐसा कह सकते हैं कि अब आप कोई गुनाह नहीं करेंगे? या आप कुरान पढ़ने के बाद ऐसा कह सकते हैं कि अब हम इसके बाद कोई गुनाह नहीं करेंगे। या गुरु ग्रन्थ साहिब को पढ़ने के बाद ऐसा कह सकते हैं कि अब हम कोई गुनाह नहीं करेंगे। तो इन महान किताबों में जो लिखा है, वो एक लिखी हुई चीज़ हो गई, वो हमारे अन्दर में है। जो कुछ भी है, वो बाहर है, और उसमें अगर हम सोच लें कि इनको पढ़ने मात्र से ही हम ठीक हो जाएँगे, तो ये हमारी गलत धारणा है। सिर्फ ये जान लेना चाहिए कि **इसका बोध होना चाहिए यानि अपनी नसों में आपको जानना चाहिए, चारों तरफ फैली ये परमात्मा की शक्ति है।** ऐसा कहा जाता है तो देखने में क्या हर्ज है? अगर आप साईंस वाले हैं तो इसे आप देखिए कि ये कौन सी शक्ति है, जिसे आप प्राप्त कर सकते हैं? ये जो शक्ति हमारे अन्दर है, ये शक्ति जिसे कि हम जानते हैं, वो भी अगर हम कहें कि आप के अन्दर सुप्तावस्था में है, तो क्या हर्ज है, कि हम इसको पूरी तरह से प्राप्त कर लें। क्योंकि अगर ये हमारी ही शक्ति है और इससे हमें ही बोध होने वाला है, और इससे हम ही बहुत ऊँचे उठ जाने वाले हैं, तो फिर क्यों न हम इस चीज़ को पूरी तरह से अपना लें और इस पर पूरी मात करके जानें कि यह चीज़ है क्या जिसे परम चैतन्य कहते हैं?

एक दिन ऐसा हुआ था कि हमारा कोई लेक्चर इन लोगों ने रखा, तो उन लोगों ने आकर बताया कि हम आपको नहीं मानते

क्योंकि आप ब्राह्मण नहीं हैं। तो हम तो कुछ बोले नहीं। सब लोगों ने कहा, कि ठीक है, लैक्चर तो पेपर में दे दिया है। अगर आप मानते नहीं हैं तो ठीक है, हम ऐसा करते हैं कि इसे कैन्सल तो कर देंगे, लेकिन हम आपका नाम दे देंगे कि इन्होंने ऐसे–ऐसे मना कर दिया। कहने लगे, नहीं, ऐसे नहीं। तो ठीक है, वहाँ प्रोग्राम हुआ लेकिन इन्होंने मुझे आगे की कोई बात नहीं बताई। न जाने लैक्चर में बोलते–बोलते, मैंने कहा, कि जो सोचते हैं कि जिन्होंने ब्रह्म तत्त्व को जाना है, वो हमारे सामने आ जाएँ। तो आठ दस आदमी आकर खड़े हो गए हमारे सामने। मैंने कहा, बैठ जाइए, बैठ जाइए। बैठने के बाद मैंने कहा, अच्छा आप मेरी ओर हाथ कीजिए। तो उनके हाथ लगे थरथराने। तो मैंने कहा, देखिए आप के हाथ थरथरा रहे हैं, वो कहने लगे, रुकिए–रुकिए माँ, हम मान गए आप शक्ति हैं, इससे हमारे हाथ थरथरा रहे हैं, मैंने कहा, ये बात नहीं है। औरों के नहीं थरथरा रहे। कहने लगे नहीं, इन लोगों के कैसे थरथरा रहे हैं। मैंने कहा, जाकर पूछिए, ये लोग कौन हैं? तो उन लोगों ने बताया, कि हम तो ठाणे के पागलखाने से आए हैं। क्योंकि ठाणे का एक पागल ठीक हो गया, इसलिए डाक्टर हमें वहाँ से ले आए। हम तो सर्टिफाईड पागल हैं। तब इनके दिमाग में बात आई कि सर्टिफाईड पागल के भी हाथ हिल रहे हैं और हमारे भी हाथ हिल रहे हैं, तो कोई न कोई बात सबके बीच में एक सी मालूम पड़ रही है। तब फिर कहने लगे, कि माँ ये चीज़ क्या है? मैंने कहा, बेटे, ये तो परम् चैतन्य है, जो तुम्हें भी हिला रहा है और उनको भी हिला रहा है। लेकिन तुम इस को प्राप्त करो। जब तुम ब्रह्म को जानोगे तभी तुम सोचना कि तुम द्विज हो गए, मतलब तुम्हारा फिर से जन्म हो गया। झूठ–मूठ से अपने सिर पर लेबल लगा लेने से आप खुश नहीं होते, उसे कुछ प्रमाण नहीं मिलता। लेकिन जो साधु होता है, जो असली सद्गुरू होता है, उसके लिए प्रमाण की क्या जरूरत है? संस्कृत में कहा जाता है, कि कस्तूरी अगर कहीं है, तो उसके लिए थोड़े ही कसम लेनी पड़ती है, कि ये कस्तूरी है। वो तो उसकी सुगन्ध, अपने आप ही ज्ञान करा देती है, कि ये कस्तूरी है। इसी प्रकार **आप के अन्दर जो शक्तियाँ हैं, जब तक उसका प्रादुर्भाव नहीं होगा, जब तक उसका प्रकाश फैलेगा नहीं, सिर्फ कहने से क्या आप विश्वास कर लेंगे, या कोई भी विश्वास कर लेगा, कि आप बहुत बड़ी आत्मा हैं? या आप बहुत बड़े धार्मिक हैं? या आप ऐसा कोई जीव हैं, जो बहुत ही पूर्व जन्म की सूझ-बूझ के साथ, इतनी पुण्यवान आत्मा है।**

इस तरह के लेबल लगा लेने से, कोई पुण्यवान नहीं होता। दूसरी बात ये भी कही जाती है, कि कर्म करने से मनुष्य स्वच्छ हो जाता है। मैंने कहा, मनुष्य कर्म

क्या करता है? जब तक आपके अन्दर ये भावना है, कि आप कर्म कर रहे हैं, तब तक आप स्वच्छ हैं ही नहीं। आपके अन्दर अहंकार बैठा हुआ है। और वो अहंकार जो है, वही आप को बता रहा है, कि आप ये कर्म कर रहे हैं, आप वो कर्म कर रहे हैं। पर वास्तव में हम लोग कर्म क्या करते हैं? कोई चीज़ मर गई, कोई पेड़ मर गया, तो उससे फर्नीचर बना लिया, या कोई पत्थर जो मरे हुए थे उन्हें लाकर आपने कोई मकानात खड़ा कर लिया। तो आपने क्या बड़ा भारी काम कर लिया? मरे से मरी चीज़। आपने कोई ज़िन्दा काम किया है? सहजयोग के बाद जब आप पार हो जाते हैं, तो आपके हाथों से कुंडलिनी उठती है।

एक बहुत बड़े साधु थे और बड़े मशहूर थे। तो वो मुझ से कहने लगे, माँ, आप इन सब लोगों को मोक्ष क्यों दे रही हैं? इनको क्यों इतनी शक्तियाँ दे रही हैं? मैंने कहा, साहिब, हम क्यों दे रहे हैं, ये तो आप हमसे मत पूछिए, लेकिन हम दे जरूर रहे हैं। और ये सोचिए, कि हमारी मर्जी, जिसे चाहें दें, आप हमारे ऊपर जबरदस्ती करने वाले कौन होते हैं? वो कहने लगे, हमने तो इतनी मेहनत की, हमने इतना किया। क्यों की मेहनत, मैंने कहा था? मेहनत करने की जरूरत नहीं है। अगर आपने मेहनत की, तो ये मत कहिए, मैंने ऐसा किया, मैंने वैसा किया, मैंने इतने उपवास किए, फिर मैंने सन्यास ले लिया, मैंने बीवी बच्चे छोड़ दिए। मैंने कहा था आपसे? आपने क्यों किए? अगर आप ये सब चीज़ न भी करते, तो भी आप आत्म साक्षात्कार को प्राप्त होते। ये ही बात है, कि हम कुछ भी नहीं कर सकते। ये जीवन क्रिया है। ये अपने आप घटित होती है। और हर मानव का ये जन्मसिद्ध अधिकार है कि वो इस योग को प्राप्त करे। भगवान ने आपको मनुष्य किस लिए बनाया? आधा अधूरा छोड़ देने के लिए? इस अज्ञान में गोते लगाने के लिए? ऐसा तो नहीं हो सकता। वो तो परमात्मा परम दयालु हैं। वो क्या आप को इस तरह से छोड़ देंगे?

बहुत से लोग सोचते हैं कि अब सारा संसार नष्ट होने वाला है। अरे जिसने ये संसार बनाया, वह इतना बलिष्ठ और समर्थ है। वो क्या इस संसार को नष्ट होने देगा? कभी भी नहीं और इसलिए जान लीजिए, कि आप लोगों में से ही, वो बलिष्ठ लोग तैयार हो जाएँगे, जो सारे संसार को बदल सकते हैं, और सारी दुनिया में आनन्द ला सकते हैं। आज बहुत देर हो गई है, इसलिए मैं कोई बड़ा लेक्चर नहीं दूँगी पर मैंने सोचा है कि मैं 16 तारीख को फिर नोएडा आऊँगी और इतनी देर रहूँगी।